खंड 4
गाँधी और समकालीन चुनौतियां

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 12 सामाजिक सद्भाव

संरचना

12.1 प्रस्तावना

लक्ष्य एवं उद्देश्य

12.2 सद्भाव का अर्थ

12.3 पश्चिम में सद्भाव

12.4 सद्भाव का वर्गीकरण

12.5 सामाजिक सद्भाव की अवधारणा

12.6 सामाजिक सद्भाव को कैसे समझा जाए?

12.7 सामाजिक सद्भाव को बिगाड़ने वाले कारक

12.8 सामाजिक सद्भाव को कैसे कायम किया जाए?

12.9 सद्भावपूर्ण समाज की विशेषताएं

12.10 सामाजिक सद्भाव को प्रोत्साहन

12.11 सामाजिक सद्भाव पर गाँधी

12.12 सारांश

12.13 संदर्भ ग्रंथ

12.14 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

12.1 प्रस्तावना

भारत एक अरब से अधिक लोगों का समाज है। लोगों के जाति समूहों के मूल भिन्न हैं और समाज कई जातियों और समुदायों में विभाजित है। मानव ईश्वर की सबसे अनुपम, बुद्धिमान और कुशल कृति है। हमारे महाकाव्य इस विश्वास को दृढ़ता प्रदान करते हैं कि ईश्वर ने मनुष्य को अपने जैसा बनाया ताकि वह ईश्वर द्वारा रचित सभी वस्तुओं तक पहुँच सके तथा कुछ प्रयासों से स्वयं ईश्वर तक भी पहुँच सके। मनुष्य के इन्हीं गुणों ने उसे अपने आप को तथा वातावरण को विकसित करने की क्षमता प्रदान की है। प्रत्येक दिन मनुष्य विकास के नये कीर्तिमान स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ता जाता है। परन्तु विकास के प्रति अत्यधिक झुकाव ने संयुक्त उन्नति के लिए खतरे पैदा किये हैं। संयुक्त उन्नति सामाजिक सौहार्द के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आम जनता को विभिन्न स्थितिओं, रंगों, नस्लों, यौन झुकावों आदि वाले व्यक्तियों के रूप में विस्तार दिया गया है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति विशेष के आधार पर व्यक्तियों तथा विशेषज्ञों के लक्ष्य अलग-अलग होते हैं। मोटे तौर पर सामाजिक लक्ष्यों को कम महत्व दिया जाता है। विस्तार को इस प्रकार एक साथ जोड़ा जाना चाहिए ताकि बड़े पैमाने पर उन्नति का विकल्प प्राप्त हो।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप निम्न को समझ सकेंगे

- सद्भाव और सामाजिक सद्भाव : अर्थ व अवधारणा

डॉ. आशु पसरीचाअध्यक्ष, गांधीवादी और शांति अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

- सद्‌भाव का वर्गीकरण
- सामाजिक सद्‌भाव को किस प्रकार प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए
- पश्चिम दुनिया के अनुसार सद्‌भाव

12.2 सद्‌भाव का सही अर्थ

इस व्यक्त और अव्यक्त ब्रह्मांड में सद्‌भाव को विभिन्न स्थितियों के रूप में पारिभाषित किया गया है जो एक-दूसरे को सहयोग देती हैं और प्रभावित भी करती हैं। जब उत्तेजना की स्थिति शांत होती है तो सद्‌भाव कायम होता है। सत्व, रजस और तमस के बीच संतुलन से इसे प्राप्त किया जा सकता है। प्रकृति में सद्‌भाव, प्रकृति की प्रत्येक शक्ति के बीच संतुलन से कायम होता है। ये शक्तियां एक-दूसरे को प्रभावित किये बगैर अस्तित्व बनाए रखती हैं। इस स्थिति को प्राप्त करना कठिन है क्योंकि कई शक्तियाँ एक-दूसरे पर निर्भर होती हैं जो मनुष्य के नियंत्रण से बाहर होती हैं जो मनुष्य के नियंत्रण से बाहर होती हैं। ऐसी स्थिति तभी प्राप्त होती है जब इन शक्तियों की क्षमता प्राकृतिक रूप से खो जाती है।

लोगों की नजर में सद्‌भाव की स्थिति में व्यक्ति पक्षपात रहित होता हैं और शंका होने की स्थिति में भी हस्तक्षेप करने से बचता है। इसे पूरा करने के लिए एक समग्र संज्ञान होना सबसे सरल दृष्टिकोण है। शरीर का अपनी शारीरिक स्थिति से सद्‌भाव एक ऐसी स्थिति है जो आंतरिक व बाह्य प्रकृति के मध्य सामंजस्य से प्राप्त किया जा सकता है। चिंतन, आकर्षक व्यक्तित्व, ठोस जीवन शैली और निरंतर व्यायाम इसे प्राप्त करने की स्थिति को प्रभावित करते हैं।

सद्‌भाव सामाजिक व्यवहार की एक स्थिति है जहां एक व्यक्ति, अन्य व्यक्तियों/प्राणियों (प्रकृति और पशु समेत) के साथ स्वयं की या धार्मिक या नस्ल संबंधी संतुष्टि को नियंत्रित करने के लिए साझेदारी करता है। व्यक्ति उन स्थितियों से रणनीतिक दूरी बनाए रखता है जो व्यर्थ में झगड़े पैदा करती हैं।

सद्‌भाव विविधता में एकता है। सद्‌भाव तब कायम होता है जब कई चीजों का महत्व कम होकर एक प्रकार की एकता को जन्म देती है। जहाँ विविधिता नहीं है वहाँ सद्‌भाव नहीं है। इसके विपरीत, जहां विविधता क्रम और अनुपात में नहीं है, वहाँ सद्‌भाव नहीं होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जहां जितनी अधिक विविधता और विविधता में एकता होगी तो सद्‌भाव उच्च स्तर का होगा।

एक तर्कसंगत और समझदार योजना के तहत सद्‌भाव ब्रह्मांड की स्थिर नींव का हिस्सा है। यह सार्वकालिक है और इसे सार्वभौमिक वैधता प्राप्त है। यह एक गणितीय रूप है जिसे सभी तर्कसंगत प्राणी पहचान सकते हैं। सद्‌भाव एक सुस्पष्ट क्रम और यहाँ तक कि संख्यात्मक सटीकता का प्रतीक है। यह ब्रह्मांड की चरम बुद्धिमानी, क्रम और अभिप्रेरित रचना की सबसे महान अभिव्यक्ति है।

12.3 पश्चिम में सद्‌भाव

प्राचीन यूनान में हरमोनिया का अर्थ था - ध्वनियों का मेल। इसके मूल शब्द का अर्थ है - एक साथ जोड़ना, जैसा एक नाव बनाने के लिए विभिन्न हिस्सों को जोड़ा जाता है। एक साथ जोड़ने या फिट होने का मतलब है - विभिन्न हिस्सों को जोड़कर एक बड़ा व पूर्ण का निर्माण। ऐसे निर्माण से पता चलता है कि जुड़ने वाले सभी हिस्सों में एक प्रकार की अनुकूलता है।

पाइथागोरस पहला व्यक्ति था जिसने संसार के लिए 'कोसमोस' शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ प्राचीन यूनान में 'क्रम' होता था। प्रत्येक संख्या और संख्यात्मक संबंध का एक निर्धारित स्थान और तार्किक संबंध है। इसी प्रकार कोसमोस में प्रत्येक चीज को बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से व्यवस्थित किया गया है। कोसमोस की इस व्यवस्था तथा अंतर-संबंध को प्रतीक चिन्ह (लोगो) के रूप में समझा जा सकता है। लोगो शब्द के कई अर्थ हैं। (शब्द और अर्थ शामिल) लोगो, कोसमोस की सभी वस्तुओं के बीच अंतर-संबंध की बुद्धिमत्ता को दर्शाता है। सभी चीजें व्यवस्थित हैं ताकि मनुष्य की बुद्धिमता इसे समझ सकें, ठीक वैसे ही जैसे हम संख्याओं और गणितीय आवश्यकताओं को समझते हैं।

ऐसी मान्यता थी कि छिपी हुई संख्याओं ने एक उत्कृष्ट बुद्धिमत्तापूर्ण क्रम में कोसमोस की संरचना है। इससे पाइथागोरस इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सभी आकाशीय पिंड गणितीय सिद्धांतों के आधार पर गतिशील रहते हैं। अरस्तू ने कहा था, "वे मानते थे .... संपूर्ण स्वर्ग एक संगीत - सप्तक (हरमोनिया) और एक संख्या है।" सबसे पहले पाइथागोरस ने "गोलों का सामंजस्य" की अवधारणा का प्रतिपादन किया। इस अवधारणा के अनुसार आकाशीय पिंड अपनी कक्षाओं में उसी अनुपात में पृथ्वी का चक्कर लगाते हैं जिस अनुपात में संगीतमय सुरों की रचना होती है। जब वे गतिशील रहते हैं तो दिव्य संगीत की रचना होती है जिसे सुनना तो संभव नहीं है लेकिन गणितीय रूप में उत्कृष्ट होता है। (अरस्तू, मेटाफिजिम्स, भाग, खंड 5)।

व्यक्तिगत साधना की पाइथागोरस परियोजना को शरीर और आत्मा के सामंजस्य की प्रक्रिया के रूप में भी समझा जा सकता है। पाइथागोरस के शिक्षण का उद्देश्य व्यक्ति के शरीर और आत्मा के बीच उसी प्रकार का संतुलन स्थापित करना था जिस प्रकार का संतुलन ब्रह्मांड में पूर्व-स्थापित था।

प्रत्येक व्यक्ति सामंजस्य के एक महान अनुक्रम का हिस्सा था - संगीतमय सामंजस्य, शरीर और आत्मा का सामंजस्य, सामाजिक सद्भाव का सामंजस्य तथा आकाशीय सामंजस्य। इन सभी स्तरों पर पाइथागोरस के समर्थकों ने पूरे कोसमोस में सामंजस्य के अनुक्रम सिद्धांत को रेखांकित किया।

सामंजस्य पर आधारित पाइथागोरस की अवधारणा एक तार्किक क्रम के आधार पर एक व्यापक परिदृश्य के उपयुक्त है जिसमें निश्चित अनुपात और निश्चित कक्षाएं सर्वोत्तम और अपरिवर्तनशील है, जहां पूर्ण संख्याएं वैश्विक घटनाओं को एक बुद्धिमत्तापूर्ण आधार प्रदान करती हैं और जहां प्रकट अव्यवस्था और विविधता को सार्वभौमिक सूत्र के रूप में दर्शाया जा सकता है जो स्पष्टता, एकता और अनुक्रम प्रदान करता है। तर्कसंगत लोगो (Logos) के अनुसार सामंजस्यता एक गणितीय रूप है जो कोसमोस को अनुक्रम या व्यवस्था प्रदान करता है।

प्लेटो पाइथागोरस का बहुत बड़ा प्रशंसक था। प्लेटो ने दावा किया कि एक दार्शनिक की शिक्षा गणित, ज्यामिति और पाइथागोरस की सामंजस्यता संबंधी अध्ययन से शुरू होनी चाहिए ताकि वह समझदार दुनिया से दूर होकर विशुद्ध बुद्धिमता पर अपना ध्यान केंद्रित करे। सुकरात ने ग्लाउकोन से कहा, "यह संभव है कि जब आंखें खगोलीय गति पर केन्द्रित होती है तो कान संगीतमय ध्वनियों पर केन्द्रित होते हैं और इस प्रकार खगोल और संगीत के विज्ञान आपस में बारीकी से जुड़े हुए हैं। ग्लाउकोन, यही तो पाइथागोरस भी कहता है। हम सहमत हैं, क्या नहीं? (प्लेटो, रिपब्लिक) प्लेटो पाइथागोरस की सभी बातों से सहमत नहीं था। प्लेटो ने तार्किक अनुक्रम वाले और बुद्धिमत्तापूर्ण ब्रह्मांड के विचार को साझा किया। उनका सिद्धांत कई विशेष वस्तुओं के संदर्भ में शुद्ध संख्याओं पर निर्भर करता है।

उन्होंने सामंजस्यता या सद्भाव को संख्यात्मक मूल्यों के साथ जोड़ा। उनका मानना था कि हमें विपरीत चीजों के बीच जो संघर्ष है उसे खत्म करना चाहिए और उनके बीच सामंजस्यता बनाने के लिए एक निश्चित संख्या का उपयोग किया जाना चाहिए। (फिलेबस, 25 ई)"

ग्रॉटफ्रीड विल्हेम लिबनिज सद्भाव या सामंजस्यता के प्रारंभिक आधुनिक सिद्धांतकारों में से एक था। पूर्व-स्थापित सद्भाव तथा अन्य संदर्भों में सद्भाव का उपयोग के संबंध में उसके विचार प्रमुख हैं। पूर्व-स्थापित धारणा के अनुसार सभी एकल इकाइयां आंतरिक कारणों से संचालित होती है और बाहरी शक्तियों या वस्तुओं के साथ सम्बन्ध से अप्रभावित रहती हैं। इसके बावजूद वे उत्तमता के साथ आपस में जुड़ी होती हैं क्योंकि ईश्वर की दिव्य योजना के तहत उनका सद्भावपूर्ण सहयोग पूर्व-स्थापित होता है। एकल व्यक्ति या वस्तु की प्रकट अंतर-क्रिया एक सर्वोत्तम डिजाइन का हिस्सा है जिसके तहत सभी घटनाएं परिवेश की एकल व्यक्ति या वस्तु के साथ घटित होती हैं परन्तु वास्तव में एक दूसरे के साथ परिघटित नहीं होती हैं। पूर्व-स्थापित सद्भाव एक रणनीति है जिसके तहत शरीर- मस्तिष्क की समस्या पर काबू पाया जाता है। इसके अन्तर्गत दिमाग और शरीर में औपचारिक संबंध नहीं होता और दोनों अपनी क्रियाएं स्वतंत्र रूप से करती हैं लेकिन एक सटीक समय होता है जो अंतर-संबंध होने का आभास देता है। यह सटीक समय ईश्वर द्वारा स्थापित किया जाता है जिसे पूर्व-स्थापित सद्भाव कहा जा सकता है। ऐसा लगता है सभी एक दूसरे से संबंधित हैं परन्तु वास्तव में वे अस्थायी और स्थानिक निकटता के दर्शाने वाले होते हैं। यही वह स्थिति है जब प्रत्येक इकाई दूसरी इकाई का दर्पण होती है। इसे सभी अन्य वस्तुओं को साथ लेना चाहिए। यह अपनी कार्यप्रणाली के तहत कार्य करता है क्योंकि इसे प्रत्येक अन्य वस्तु के पूर्व-स्थापित कार्यों में अपने कार्य का सामंजस्य बिठाना है। पूर्व-स्थापित सद्भाव ईश्वर की तर्कसंगतता का एक कार्य है - एक सर्वोत्तम अनुक्रम की योजना जिसे केवल दिव्य बुद्धिमत्ता के द्वारा ही समझा जा सकता है।

डेवी व्यक्ति के सौंदर्य अनुभव के संदर्भ में सद्भाव की चर्चा करता है परन्तु उसका सामाजिक दर्शन आदर्श समुदायों का वर्णन करता है जो हमें सद्भाव की याद दिलाते हैं। वह लिखता है, "समाज व्यक्तियों का आपसी संबंध है। व्यक्ति समाज की एक सुदूर इकाई में विकास नहीं करता है बल्कि एक दूसरे के साथ संबंध से विकसित होता है। (डेवी, *द लेटर वर्क्स*, 1925-1953, 80) यहाँ हम व्यक्तियों को देखते हैं जो आपस में जुडे हुए हैं और समाज का निर्माण करते हैं - एक व्यापक संपूर्णता/डेवी जोर देकर कहते हैं कि समाज व्यक्तियों से पृथक होकर खड़ा नहीं हो सकता। समाज के निर्माण का आधार व्यक्तियों के परस्पर संबंध होते हैं। ये सम्बन्ध व्यक्तियों के साथ-साथ समाज के लिए लाभकारी होते हैं। समाज का अर्थ है - संघ, सम्मिलित प्रयास के लिए साथ आना और किसी अनुभव को महसूस करने के लिए कार्य करना जिसे साझीदार बनकर बेहतर बनाया जा सकता है। (डेवी, *द मिड़ल बर्म्स ऑफ जॉन डेवी*, 1899-1924, 197) एक साझे समाज में व्यक्ति एक दूसरे के साथ बेहतर अंतर-संबंध बनाते हैं। समुदाय के संबंध में डेंवी का विचार सद्भाव की परिभाषाओं के समान है। इसके तहत एक व्यापक संपूर्णता में विभिन्न हिस्से परस्पर जुड़े होते हैं और सभी हिस्सों को इसका लाभ प्राप्त होता है।

सद्भाव स्थिर नहीं रह सकता और यह समान तत्वों का एक साधारण संयोजन भी नहीं हो सकता है। डेवी के लिए, "सद्भाव या सामंजस्यता एकरूपता नहीं है या सार्वभौमिकों की तात्कालिकता नहीं है कृकृकृकृसद्भाव स्थिर नहीं बल्कि गतिशील है, यह एक व्यवस्थित परिवर्तन है .... अपनी लयबद्ध प्रकृति में, सद्भाव को न केवल विविधता और विपरीतता ही नहीं बल्कि तनाव और प्रतिरोध की भी आवश्यकता होती है।" (टैन, *कन्फ्यूशियन डेमोक्रेसी*, 75)

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) सद्भाव की अवधारणा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

....

....

....

....

....

12.4 सद्भाव का वर्गीकरण

सद्भाव और संघर्ष की अनुपस्थिति को एशियाई परिवारों द्वारा खुशहाल परिवार के गुणों के रूप में माना जाता है। (शेक, 2001) अधिक पारंपरिक एशियाई लोगों में जीवन के प्रति एक सामूहिक नीति होती है, (त्रियांडिस, 1995) जहाँ परिवार केन्द्र में होता है। (ली तथा मेजेल्ड - मोसे, 2004) एशियाई माता-पिता और बच्चे उन गुणों का शायद ही वर्णन करते हैं जिन्हें यूरो-अमेरिकी संस्कृति में मूल्यवान समझा जाता है, जैसे भावनात्मक अभिव्यक्ति और संवाद। (शेक, 2001) संस्कृतियां उन गुणों को अधिक महत्व दे सकती है जिसमें जीवन के प्रति व्यक्ति की अपनी नीति हो और जहाँ स्वयं ही केन्द्र में हो। (त्रियांडिस, 1995)

कई संस्थान हो सकते हैं। मोटे तौर पर हम इनका निम्न वर्गीकरण कर सकते हैं :

1) **परिवार :** व्यक्ति परिवार में जन्म लेता है और परिवार में ही उसका पालन-पोषण होता है। उसके परिवार की स्थिति और उसके परिजनों विशेषकर अभिभावकों द्वारा ही उस व्यक्ति के व्यक्तिगत गुण विकसित और प्रभावित होते हैं।

2) राष्ट्र और सरकार : राष्ट्र ही वह स्थान है जहाँ व्यक्ति अपना जीवन बिताता है और विभिन्न प्रकार के कार्य करता है। अपने तथा अन्य देशों के संदर्भ में व्यक्ति की प्रतिबद्धता सामाजिक सद्भाव को प्रभावित करती है। सरकार की क्षमता शांति, समानता और स्वतंत्रता की गारंटी देने में शक्ति के उपयोग के रूप में परिलक्षित होती है। परिणामस्वरूप, एक सरकार को सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए स्पष्टवादी, ईमानदार, न्यायपूर्ण और उत्तरदायी होना चाहिए।

3) संगठन : एक व्यक्ति विशेषज्ञ या सेवा प्रदान करने वाला या किसी गैर-उत्पादन संबंधी कार्य से जुड़ा हो सकता है। किसी भी स्थिति में व्यक्ति का अन्य व्यक्तियों से सम्बन्ध उसकी कार्य संस्कृति और उसके सहयोगियों से प्रभावित होता है।

4) समुदाय और आस-पड़ोस : एक पुरानी कहावत है : एक व्यक्ति अपने दोस्तों के जरिए जाना जाता है। व्यक्ति की मानसिक स्थिति और पड़ोस में रहने वाले व्यक्तियों की प्रकृति तथा नेटवर्क व्यक्ति के सामाजिक सद्भावके प्रति कटिबद्धता को काफी हद तक प्रभावित करते हैं।

12.5 सामाजिक सद्भाव की अवधारणा

सामाजिक सद्भाव एक पारंपरिक विचार है जो एक आदर्श समाज का सुझाव देता है, ऐसा समाज जहाँ संघर्ष नहीं है और व्यक्ति एक-दूसरे के साथ सहयोग करता है। सामाजिक

सौहार्द का एक प्रमुख तत्व है - लोकतंत्र और कानून का संचालन तथा निष्पक्षता व न्याय। यह लोगों की चिंताओं का दर्पण होता है।

सामाजिक सद्भाव स्वभाविक तौर पर एक सामाजिक विचार है जो सामाजिक संगठनों में समाहित है। सक्षम नागरिकता के संदर्भ में यह समायोजित परिकल्पना और दिनचर्या को मजबूती प्रदान कर सकता है जहाँ राज्य लोगों के कल्याण के लिए प्रयासरत है।

सामाजिक सद्भाव की परिकल्पना का प्राकृतिक पैमाना भी है। यह व्यक्ति और प्रकृति के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की महत्वपूर्ण जांच के लिए उल्लेखनीय क्षमता प्रदान करता है।

सामाजिक सद्भाव की अवधारणा का प्रारंभ कन्फ्यूशियस काल के दौरान चीन को माना जा सकता है। इसलिए इस अवधारणा को नव-कन्फ्यूशियसवाद के रूप में व्यक्त किया जाता है। (गुओ और गुओ, 15 अगस्त, 2008) वर्तमान समय में मध्य 2000 के दौरान महासचिव हू-जिंताओ की वैज्ञानिक विकास सिद्धांत में इस अवधारणा को एक प्रमुख तत्व के रूप प्रस्तुत किया गया। 2005 के नेशनल पीपुल्स कांग्रेस में हू-वेन प्रशासन ने इसे प्रस्तुत किया (रूईपिंग फेन, 11 मार्च, 2010)

चीनी समाज में बढ़ती सामाजिक बुराई और असंतुलित विकास की प्रतिक्रिया में इस दर्शन को आगे बढ़ाया गया। सामाजिक असंतुलन का कारण था - अबाधित मौद्रिक विकास। इस वजह से सामाजिक संघर्ष हुए। सामाजिक संतुलन और सद्भाव के लिए वित्तीय विकास के ईद-गिर्द इस सिद्धांत का विकास हुआ। (वाशिंगटन पोस्ट, 12 अक्तूबर, 2006) एक मामूली समृद्ध समाज में यह सिद्धांत कम्युनिस्ट पार्टी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय लक्ष्यों में एक था।

सद्भावपूर्ण समाज को बढ़ावा देना हू-जिंताओ का प्रशासनिक दर्शन था जो पूर्व शासकों के दर्शन से अलग था (जोंग वू, 11 अक्टूबर, 2006) अपने शासनकाल के अंतिम समय में हू इस दर्शन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार देना चाहते थे। इसमें संपूर्ण विश्व में शांति और सहयोग पर विशेष बल दिया गया। इससे सद्भावपूर्ण विश्व का निर्माण होगा। हू के उत्तराधिकारी शी जिनपिंग ने इस सिद्धांत के संयमित उपयोग से "चीनी स्वप्न" के अपने दृष्टिकोण को अधिक स्पष्ट किया है।

एक संघीय या कम्युनिस्ट गणराज्य में सामाजिक सद्भाव सद्भावपूर्ण समाज के विकास से संबंधित है। सामाजिक सद्भाव एक प्रक्रिया है जिसके तहत एक विशिष्ट संस्कृति में लोगों के बीच सम्मान, संवाद, स्नेह, विश्वास, शांति, उदारता, तालमेल और मूल्य बढ़ाने का प्रयास किया जाता है और इसके लिए राष्ट्रीय मूल, वजन, वैवाहिक स्थिति, जातीयता, रंग, लिंग, नस्ल, उम्र और व्यवसाय पर ध्यान नहीं दिया जाता है। इस प्रकार सामाजिक सद्भाव मौलिक रूप से सामाजिक अवधारणा है। इसका अर्थ है - एक-दूसरे के साथ सद्भावपूर्ण माहौल में जीवन व्यतीत करना। इस अर्थ में हम लोगों के लिए कार्य कर रहे विशिष्ट प्रतिष्ठानों और लोगों के साथ उनके संबंध पर भी ध्यान देना चाहिए। सामाजिक सद्भाव किसी संस्कृति के आकलन के लिए सबसे महत्वपूर्ण विचार है। एक वैश्विक और सूचना केन्द्रित समाज में सामाजिक सामंजस्य एक प्रोत्साहन है जो प्रेम, शांति, न्याय, स्वतंत्रतता, समानता, भाईचारा, सहयोग, अहिंसा, सहिष्णुता, मानवतावाद और अन्य सार्वभौमिक गुणों को एकजुट करता है और बच्चों को प्राथमिकता प्रदान करता है। इस प्रकार पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों के लिए सद्भाव एक उभयनिष्ठ मूल्य है जो संस्कृतियों के संघर्ष को खत्म कर सकता है। सामाजिक सद्भाव युद्ध, आतंक और गरीबी से परे एक सद्भावपूर्ण और सतत शांति की स्थापना करता है।

इस प्रकार सद्‌भाव आम लोगों को अपने परिवेश के व्यक्तियों के साथ समन्वय स्थापित कर "प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रत्येक वस्तु" को विकसित करने के लिए प्रेरित करता है। दुःखद स्थिति है कि यह विचार अभी भी केवल एक विचार ही है क्योंकि मनुष्य मैत्री के साथ रहने में नहीं बल्कि असद्‌भावपूर्ण माहौल बनाने में दक्ष है। इसके लिए छोटी-छोटी बातों के लिए होने वाले झगड़ों को समाप्त करना होगा। सभी व्यक्तियों को प्रत्येक व्यक्ति की खुशी और शांति के लिए विचार करना होगा। इसे अपना व्यक्तिगत कर्तव्य समझना होगा। निकट भविष्य में ऐसा संभव होना मुश्किल लगता है।

12.6 सामाजिक सद्‌भाव को कैसे समझा जाए?

सामान्य अर्थ में सामाजिक सद्‌भाव का अर्थ है एक ऐसी सामाजिक स्थिति जो संतुलन, तालमेल और परस्पर सहयोग प्रदर्शित करता है और समाज विकास की दिशा में आगे बढ़ता है। यह स्थिति संघर्ष, तनाव और कलह से रहित होती है। सामाजिक सद्‌भाव सभी कुछ या कुछ भी नहीं की स्थिति नहीं होती है बल्कि यह विभिन्न स्तरों पर मतभेद की अनुमति देता है। किसी समाज के सद्‌भाव का स्तर समाज के विभिन्न आयामों के सद्‌भाव की मात्रा/स्तर पर निर्भर करता है। एक समाज विभिन्न कालखंडों में विभिन्न स्तर के सद्‌भाव को प्रदर्शित करता है। यह विभिन्न कालखंडों में सद्‌भाव के तत्वों की उपस्थिति पर निर्भर करता है। इसलिए एक समाज कालखंड "ए" में अत्यधिक सद्‌भावपूर्ण हो सकता है और कालखंड "बी" के दौरान कम सद्‌भावपूर्ण हो सकता है। इसके अलावा समाज में सद्‌भाव का एक महत्वपूर्ण घटक उपस्थित रह सकता है और साथ ही ऐसे घटक भी मौजूद हो सकते हैं जो समाज को सद्‌भाव रहित बनाते हैं, जब समाज के महत्वपूर्ण आयामों में सद्‌भावना/सामंजस्यता रहती है तो समाज अधिकतम सद्‌भाव का अनुभव करता है। इसके विपरीत जब समाज के महत्वपूर्ण आयामों में सामंजस्यता/सद्‌भावना का अभाव होता है तो समाज सद्‌भावरहित हो जाता है। तुलनात्मक स्थिति में, समाज की सद्‌भावपूर्ण स्थितियों में अंतर होता है। कुछ समाज अन्य समाजों की तुलना में अधिक सद्‌भावपूर्ण होते हैं क्योंकि उनमें सद्‌भावपूर्ण तत्वों की मात्रा अधिक होती है।

एक समाज संतुलित होता है जब एक प्रकार की शक्तियों या हितों को विपरीत प्रकार की शक्तियाँ या हित चुनौती देते हैं। एक संतुलित समाज में कोई एक शक्ति या हित इस हद तक हावी नहीं हो सकता कि अन्य शक्तियों या हितों का दमन किया जा सके। संरेखण या तालमेल ऐसी स्थिति को कहा जा सकता है जब समाज के तत्व उचित तथा क्रम के अनुसार परस्पर जुड़े हों तथा किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इन तत्वों में समन्वय हो। एक आदर्श संरेखीय समाज में हितों, जरूरतों, सम्बन्धों, गतिविधियों, प्रक्रियाओं, नियमों, मूल्यों और लक्ष्यों में बेहतर समन्वय हो तथा एक साझे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एकीकृत हों। परस्पर सहयोगी और समृद्ध समाज का अर्थ है कि समाज के निवासी परस्पर सहयोग प्रदान करते हैं और विकास व समृद्धि के लिए एक दूसरे को मदद, इच्छाशक्ति व विश्वास के साथ सहयोग करते हैं। अंत में, यह कहा जा सकता है कि एक समाज को सही अर्थ में सद्‌भावपूर्ण नहीं कहा जा सकता यदि समाज ने प्रकृति के साथ सामंजस्य नहीं बिठाया है। प्रकृति जो समाज को समर्थन देती है और दीर्घावधि सहायता प्रदान करती है। इस प्रकार मनुष्य - प्रकृति का सामंजस्य भी एक सद्‌भावपूर्ण समाज का महत्वपूर्ण तत्व है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) सामाजिक सद्भाव से आप क्या समझते हैं? विवेचना करें।

....

....

....

....

....

12.7 सामाजिक सद्भाव को कैसे कायम किया जाए?

यह असंभव प्रतीत होता है। राष्ट्रों और पड़ोसियों के बीच बहुत अधिक नकारात्मकता है। मुख्य कारण लालच, ईर्ष्या, अक्षमता, शक्ति की लालसा और मूर्ख राजनेताओं का संयोजन है। इसका कोई इलाज नहीं है। एक व्यक्ति अधिक से अधिक इन नकारात्मकताओं से अपने को बचा सकता है। यदि व्यक्ति यह कहता है कि, "जो भी मेरे वश में है, मैं उसे हड़पनेवाला हूँ" तो समाज के विलुप्त होने की प्रक्रिया में तेजी आएगी। यह अच्छा है या बुरा - यदि इस बहस को छोड़ दें तो यह अवश्य ही दूसरे प्राणियों के तो संदर्भ में अन्यायपूर्ण लगता है कि हम पूरी पृथ्वी अपने लिए मान लें। सभी चीजों को आगे बढ़ना चाहिए। सामाजिक सद्भाव तक पहुँचने के रास्ते हैंः परस्पर सम्मान और समझ; संवाद, शांति, स्वतंत्रता, निष्पक्षता, न्याय, समानता, कोई भेदभाव नहीं आदि।

लोगों की निष्पक्षता और न्याय का पैमाना है - धन और आय वितरण के मामले में लोगों की निष्पक्षता, वित्तीय और टैक्स नीति, रोजगार के अवसर, व्यक्तिगत विकास, उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए परीक्षा प्रणाली, सरकारी कर्मचारियों की पदोन्नति, सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल सुविधा, निःशुल्क शिक्षा आदि।

12.8 सामाजिक सद्भाव को बिगाड़ने वाले कारक

स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है कि सामाजिक सद्भाव के विघटन के लिए कौन से कारक जिम्मेदार होते हैं? इस प्रश्न का उत्तर आज की सामाजिक व्यवस्थाओं के गहन विश्लेषण में निहित है। अपने पूर्ववर्ती समाजों के विपरीत आज का समाज एक बहुआयामी, बहु-सांस्कृतिक, बहु-जातीय और एक जटिल विविधता वाला समाज है।

सामाजिक विषमता धर्म, जाति, नस्ल, भाषा आदि पर आधारित असमानता से जन्म लेती है। हालांकि यह पूरी दुनिया में मौजूद है लेकिन विकासशील देशों में एक सामान्य घटना है। इन संघर्षो के कारण विकासशील देशों की विकास प्रक्रिया बाधित हुई है। ऐसे समाजों का इतिहास और सांस्कृतिक अतीत अक्सर असमानता को बढ़ावा देते हैं। वे मनुष्य की मूलभूत गरिमा और आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाते हैं। वास्तव में, सामाजिक सद्भाव के विनाश के ये मूल कारण हैं। अवसरों तक पहुँच में असमानता के कारण भी आर्थिक विषमताएं हैं। समाज में लोगों की आर्थिक स्थिति में अंतर ने दो भिन्न वर्गों का निर्माण किया है - एक जो सम्पन्न हैं और दूसरे वे जो विपन्न हैं। इतिहास बताता है कि वर्गों के सीमांकन से अमीर वर्ग द्वारा गरीबों का शोषण किया जाता है। इससे सामाजिक ताने-बाने पर विपरीत असर पड़ता है, संघर्ष जन्म लेता है और परिणामस्वरूप आपसी सम्बन्ध छिन्न-भिन्न होते है और समाज में विषमता बढ़ती है।

12.9 सद्भावपूर्ण समाज की विशेषताएं

एक सद्भावपूर्ण समाज अपनी विशेषताओं के आधार पर अपने निवासियों को सुरक्षा, संरक्षा और आजादी प्रदान करता है तथा उनमें भावनाओं व अन्य सकारात्मक प्रभावों की संतुष्टि की सुविधा प्रदान करता है। निवासियों के बीच संवाद और आपसी संबंधों की परस्पर सम्मान, विश्वास और साझेदारी से मजबूती मिलती है तथा पारस्परिक सहायता और लाभकारी सहयोग से इसे बढ़ावा मिलता है। समाज के निवासियों की ऐसी भावनाएं होती हैं जिसके आधार पर वे परस्पर लाभकारी सहयोग व संवाद की शुरूआत करते हैं। इन भावनाओं और गुणों में शामिल हैं - सहानुभूति, सहिष्णुता, उत्साह, पारस्परिकता, निष्पक्षता, नैतिक जागरूकता, तर्कशीलता, विचारशीलता, साझेदारी, देखभाल आदि। सद्भावपूर्ण समाज की प्रणालियां और संस्थाएं निवासियों के अधिकारों व आजादी की रक्षा तथा विकास ही नहीं करतीं बल्कि इन भावनाओं और गुणों का पोषण भी करती हैं। अन्य तर्कसंगत मूल्यों को प्रोत्साहन देने के अलावा निवासियों को सामाजिक सद्भाव को व्यवहार में बनाए रखने और इसे संरक्षित रखने के प्रयास करने चाहिए। चूँकि यह एक आदर्श स्थिति है इसलिए संभव है कि वास्तविक दुनिया में इसे पूरी तरह से अनुभव करना संभव न हो। परन्तु इसके प्रमुख गुणों को सिद्धांत रूप में महसूस किया जा सकता है। इसे अकल्पनीय या असंभव या इच्छा आधारित विचार मानना जल्दबाजी होगी। किस हद तक इस अवधारणा को लागू किया जा सकता है, इसका आकलन व परीक्षण अनुभव आधारित साधनों के द्वारा अर्थात् अप्रत्यक्ष रूप से किया जा सकता है।

इसलिए सामाजिक सद्भाव में सकारात्मक और नकारात्मक - दोनों ही प्रकार के विचार हैं। यह, अवधारणा के वर्तमान प्रयोग और सर्वेक्षणों में उपयोग किये जाने वाले अर्थ के अनुरूप ही है। जब नकारात्मक आधार पर कल्पना की जाती है तो यह ऐसी स्थिति की ओर इंगित करता है जहाँ सघर्ष, टकराव, तनाव और विरोधाभास की मौजूदगी नहीं होती है। सकारात्मक अर्थ में सामाजिक सद्भाव परस्पर समर्थन, सुविधा और समृद्धि की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है जो आपसी विश्वास, सम्मान और साझेदारी से बंधा होता है। जब किसी समाज में केवल नकारात्मक रूप से कल्पना की गई विशेषताएं विद्यमान रहती है तो कहा जाता है कि इस समाज में बुनियादी सद्भाव मौजूद है। जब किसी समाज में सकारात्मक रूप से कल्पना की गई विशेषताएं होती है इसे अधिकतम सद्भाव की संज्ञा दी जाती है। बुनियादी या अधिकतम सद्भाव की उपस्थिति वांछनीय है। सामाजिक सद्भाव की अवधारणा के अंतर्गत सद्भाव के मूलभूत विचारों को शामिल किया गया है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) सद्भावपूर्ण समाज की विशेषताओं पर चर्चा करें।

....

....

....

....

....

....

12.10 सामाजिक सद्भाव को प्रोत्साहन

व्यक्तियों को एक-दूसरे के लिए अधिक सामाजिक बनाकर सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा दिया जा सकता है। इसे दो स्तरों पर किया जा सकता है :

क) संस्थागत स्तर : संस्थागत स्तर पर सामाजिक सद्भाव के अंतिम लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निम्न मध्यवर्ती लक्ष्यों का अनुपालन किया जा सकता है, जैसा कि नीचे दी गई तालिका 12.1 में दिखाया गया है :

तालिका 12.1: सामाजिक सद्भाव के लक्ष्य

संस्थाएं	मध्यवर्ती लक्ष्य	अंतिम लक्ष्य
परिवार	• पारिवारिक सहयोग और कल्याणकारी प्रावधान • तलाक की दर कम, सामाजिक रूप से स्थायी जन्म दर • वरिष्ठ सदस्यों की प्रभावी पारिवारिक देखभाल • परिवार के अंदर और बाहर लैंगिक समानता	
राष्ट्र और सरकार	• समाज में शांति • आर्थिक और राजनीतिक आजादी • आपराधिक न्याय • समानता • मानवाधिकारों की सुरक्षा	• सभी संबंधों में नीति परायणता • ईश्वर के प्रति सम्मान • प्रेम/सहानुभूति • न्याय, निष्पक्षता बराबरी
संगठन	• प्रशासन और निष्पादन आदि में पारदर्शिता • धन का मोटे तौर पर वितरण • व्यापार और सामुदायिक जीवन का एकीकरण • निरंतर ऋणग्रस्तता की अनुपस्थिति • पारिवारिक व्यवसाय/स्वरोजगार का उच्च स्तर	• विश्वास • सत्य • क्षमा • आशा • उदारता • दया
समुदाय और आस-पड़ोस	• जोखिम साझा करने और प्रत्यक्ष वित्तीय संबंधों के लिए प्रोत्साहन • एक साप्ताहिक साझा अवकाश दिवस आदि • सामुदायिक न्यायालय और स्थानीय न्याय के अन्य रूप • कानून संबंधी व्यापक ज्ञान • सजा के बाद अपराधी का समाज में एकीकरण • अन्य समस्याओं को समझना तथा उनके समाधान के लिए प्रयास करना आदि	

ख) व्यक्तिगत स्तर : निम्न सुझावों का पालन करके व्यक्तिगत स्तर पर यह किया जा सकता है।

- *सहानुभूति को विकसित करना :* सहानुभूति, दूसरे की भावनाओं व समस्याओं की गहरी समझ को दर्शाती है। भावनाएं व्यक्ति को सही या गलत की ओर ले जाती हैं। दूसरे के सही अथवा गलत कार्यों से संबंधित निर्णय लेने के दौरान व्यक्ति को दूसरे की भावनाओं को समझने की भी जरूरत है। यदि ऐसा होता है तो दुष्कर्म और दुष्कर्मीय गरीब और झपटमार भ्रष्टाचार और लंबित मामले नहीं रहेंगे। ऐसे समाज में सामाजिक सद्भाव समृद्ध होगा।

- *मित्रता के लिए सामाजिक समूह :* एक समूह में दो या दो से अधिक सदस्य होते हैं और इनका कमोबेश समान लक्ष्य होता है। कोई व्यक्ति अपनी रूचि के अनुसार समूह का चुनाव कर सकता है जैसे पुरुष या महिला क्लब, बच्चों के लिए मनोरंजन केन्द्र, सामाजिक कार्यकर्ता क्लब, पड़ोस का स्वच्छता केन्द्र या स्थानीय व्यवसाय संघ आदि। समूह में शामिल होने का लक्ष्य दूसरों से संवाद स्थापित करना होना चाहिए ताकि दूसरों को भली-भांति समझा जा सके। इसके अलावा एक-दूसरे के लिए कार्य करना चाहिए, लक्ष्यों को साझा करना चाहिए, एक-दूसरे को समझना चाहिए, सम्पर्क बनाने चाहिए आदि। संकट के दौरान उनका महत्व बढ़ जाता है।

- *पारस्परिक रूप से सक्षम बनाना :* हम सभी के पास विशिष्ट प्रतिभा, कौशल व क्षमता है। यही हमारी ताकत है और यही हमारी कमजोरी भी है क्योंकि हमें कुछ निश्चित चीजों के लिए ही कौशल प्राप्त होता है। समूह में साथ काम करने वाले व्यक्ति अपना ज्ञान और कौशल एक-दूसरे के साथ साझा करते हैं। ऐसा समूह अधिक दक्ष होता है क्योंकि एक सदस्य का कमजोर पक्ष दूसरे का मजबूत पक्ष हो सकता है। एक साथ होने में ही शक्ति निहित है। यह आपसी विश्वास लम्बे समय के लिए सद्भावपूर्ण संबंधों को जन्म दे सकता है।

- *सहयोगियों को हासिल करना :* लोग जो एक-दूसरे के प्रति विश्वास रखते हैं और देखभाल करते हैं और प्रगति के लिए ज्ञान आधारित जागरूकता का उपयोग करते हैं, उन्हें डरने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब वे समूह को समर्थन देने के लिए प्रयास करते है तो उनकी अपनी आवश्यकताएं भी पूरी हो जाती हैं। छोटे समूह साथ मिलकर बड़े समूह बन सकते हैं और इस प्रकार साथ आगे बढ़ सकते हैं। यदि हम ऐसा नहीं करते है तो हमें निकट भविष्य में हताश लोगों से खतरों का सामना करना पड़ेगा। जिन लोगों के पास जीवन यापन के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं वे उन लोगों के सहयोगी बन जाएंगे जिनके पास बर्बाद करने के लिए भी पर्याप्त से अधिक संसाधन है। सद्भावपूर्ण और नेक सम्बन्धों के माध्यम से इन सहयोगियों की पहचान करनी होगी।

- *अंतर समाप्त करना :* पूरा ब्रह्मांड द्वंद में विभाजित है। यह दो विपरीत शक्तियों के बीच के विकल्प के समान है। एक निर्माण की ओर अग्रसर है तो दूसरा विनाश की ओर। परन्तु इस अंतर को पाटने की जरूरत है और लोगों को निर्माण की ओर ले जाने की आवश्यकता है। आम तौर पर जब हम दूसरों की सेवा करने का विकल्प चुनते हैं और उनकी स्वतंत्र इच्छाओं का सम्मान भी करते हैं तो हम सृजन की भावना का पक्ष लेते हैं। ब्रह्मांड भी इसका प्रत्युत्तर सद्भाव में देता है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के विभिन्न तरीकों पर चर्चा करें।

....

....

....

....

....

....

....

12.11 सामाजिक सद्भाव पर गाँधी

महात्मा गाँधी के जीवन और कार्यों में सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देना स्वराज-प्राप्ति के समान था। अपने पूरे जीवन में गाँधी ने सांप्रदायिक हिंसा और युद्ध के खिलाफ लड़ाई लड़ी। गाँधी ने सांप्रदायिकता के सभी रूपों - हिन्दू, मुस्लिम और सिख का विरोध किया। उन्होंने जनवरी, 1942 में लिखा, "मैं इसे सर्वथा गलत मानता हूँ कि व्यक्ति को धर्म के आधार पर पृथक किया जाए।" गाँधी ने मूलभूत सांप्रदायिक अवधारणा का भी खंडन किया कि अपने अलग-अलग धर्मों के कारण हिन्दुओं और मुस्लिमों के राजनीतिक-आर्थिक हित अलग-अलग हैं।

गाँधी की धार्मिक दृष्टि में धर्मों की समानता पर जोर दिया गया। गाँधी ने कहा कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए सभी धर्मों को समान-सम्मान देना पहला कदम है। वे दृढ़ता से मानते थे कि कोई धर्म, अन्य धर्म की तुलना में श्रेष्ठ या नीच नहीं है। अपने आध्यात्मिक ज्ञान के लिए गाँधी ने सभी धर्मों के ग्रंथों का अध्ययन किया। वे भगवद् गीता तथा कुरान की शिक्षाओं तथा न्यू टेस्टामेंट (बाईबिल) में माउंट पर दिये गए उपदेशों से सर्वाधिक प्रभावित थे। उनकी धार्मिक व नैतिक दृष्टि बौद्ध तथा जैन धर्मों से भी बहुत प्रभावित थीं।

गाँधी के अनुसार दुनिया के सभी महान धर्मों को अपने अनुयायिओँ के बीच आत्म नियंत्रण, बलिदान, सद्भाव, शांति और समझ पर आधारित जीवन का उपदेश देना चाहिए ताकि पृथ्वी पर स्वर्ग का निर्माण हो सके। गाँधी ने सभी धर्मों की अच्छी बातों तथा अनुयायियों की क्षमता पर विशेष जोर दिया जिससे विभिन्न धार्मिक मामलों का समाधान ढूंढा जा सके। ये धार्मिक मामले संघर्ष पैदा करते हैं। इसके लिए सभी धर्मों की सच्ची भावना और एकजुट शक्ति को जगाना होगा तथा आपसी सहिष्णुता, विश्वास, सम्मान और दिलों का मेल जैसी भावनाओं को विकसित करना होगा।

गाँधी का दृढ़ विश्वास था कि भारत की स्वतंत्रता और विकास के लिए सांप्रदायिक सद्भाव और अंतर-धर्म संवाद जरूरी हैं। सांप्रदायिक समस्या को हल करने तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने के लिए गाँधी ने 1920 के दशक के खिलाफत आंदोलन को समर्थन देकर एक गंभीर प्रयास किया। 1946 से 1947 के दौरान गाँधी ने सांप्रदायिकता के खिलाफ तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए निरंतर अभियान चलाया। नोआखली, बिहार, कोलकाता

और दिल्ली के भीषण दंगों के दौरान सांप्रदायिक शांति कायम करने के लिए उनके किये गए कार्य अब किंवदंती बन गए हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 6

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) सामाजिक सद्भाव पर गाँधी के विचारं पर प्रकाश डालें।

....

....

....

....

....

....

....

....

12.12 सारांश

जब लोग सामाजिक समस्याओं का हल ढूंढने एक साथ आते हैं तो विविधिता के तनाव में सामाजिक सद्भाव की आवश्यकता पड़ती है। इन समस्याओँ के रहते हुए काम करना सद्भावपूर्ण समाज का प्रारंभिक चरण है जबकि सफल कार्यान्वयन इसका अंतिम चरण है। इसका अर्थ यह है कि सद्भावपूर्ण समुदाय निरंतर सद्भावपूर्ण नहीं रहते हैं परन्तु इन समुदायों के पास ऐसी संस्थाएं और प्रक्रियाएं होती हैं जो लगातार सद्भाव को प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। टैन उनमें से कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं की पहचान करता है जिनमें संवाद, समावेश, विकास शामिल हैं। सद्भाव में विभिन्न तत्व क्रमबद्ध तरीके से उपस्थित रहते हैं। सामाजिक सद्भाव एक गुण है जो सामाजिक स्थिति पर व्याप्त रहता है जब साझे मूल्यों को प्राप्त किया जाता है। इसके लिए संवाद और भागीदारी की आवश्यकता होती है। सामाजिक सद्भाव में प्रत्येक प्रतिभागी प्रारंभिक चरण में योगदान देता है और अपनी योग्यता के अनुसार अंतिम चरण का आनंद प्राप्त करता है। डेवी के दर्शन के अनुसार सामाजिक सद्भाव को व्यक्तिगत-सामुदायिक विकास में अवश्य योगदान देना चाहिए यदि समुदाय एक नियामक आदर्श बनना चाहता है। (पूर्वोक्त)

सद्भाव केवल ब्रह्मांड तथा व्यक्तिगत स्तर पर ही प्राप्त नहीं किया जा सकता बल्कि इसे मानवीय संबंधों में भी अनुभव किया जा सकता है। एक परिवार के सदस्यों, एक परियोजना के भागीदारों, एक कार्यालय के कर्मचारियों तथा एक देश के नागरिकों को सामंजस्य या सद्भावपूर्ण माहौल के अन्तर्गत माना जाएगा जब उनके व्यक्तिगत योगदान सभी अन्य सदस्यों तथा एक बड़े लक्ष्य को समर्थन प्रदान करते हैं। लोगों में सद्भाव एक वंशावली गुण है जो सामाजिक परिस्थितियों की अवधारणा बनाने का एक तरीका भी है। एक समावेशी समाज के निर्माण के लिए धार्मिक सहिष्णुता, सम्मान और सभी मनुष्यों से प्रेम से संबंधित गाँधी का आह्वान अपरिहार्य है और वर्तमान परिदृश्य में कुछ अतिरिक्त किये जाने की आवश्यकता है।

12.13 संदर्भ ग्रंथ

डेवी, जे. (2008), *द मिडिल वर्क्स ऑफ जॉन डेवी, 1899-1924*, न्यू यॉर्क : साउथर्न इलिनॉयस यूनिवर्सिटी प्रेस, 197

कुमार हजिरा (1995), थियरीज इन सोशल वर्क प्रैक्टिस, देहली : फ्रेंड्स पब्लिशर्स।

डेवी, जे. (1988), *जॉन डेवी : द लेटर वर्क्स, 125-1953, 1938-1939*, वॉल्यूम-13, न्यू यॉर्क : साउथर्न इलिनॉयस यूनिवर्सिटी प्रेस, 80

जॉनसन एल.सी. (1992), *सोशल वर्क प्रैक्टिस : ए जर्नलिस्ट ऐप्रोच*, यू.एस.ए. : ऐलीन एण्ड बेकन.

अरिस्टूट्ल (1989), *अरिस्टूट्ल इन 23 वॉल्यूम्स*, वॉल्यूम 17, 18, ट्रांसलेटेड बाय हग ट्रेडेन्निक, कैम्ब्रिज, एम.ए., हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस : लंदन, विलियम हीनमैन लिमिटेड

प्लेटो (1925), *प्लेटो इन ट्वेल्व वॉल्यूम*, वॉल्यूम 19 (*फिलेबस 25 ई.)*, ट्रांस्लेटेड बाय हैरल्ड एन. हारोल्ड एन फॉलर, कैम्ब्रिज, एम.ए., हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

गॉटफ्रीड विलहेम लीबनिज़ (1989, फर्स्ट पब्लिश्ड 1716), *फिलोसफिकल ऐस्से*, लंदन, हैकेट्ट पब्लिशिंग कम्पनी, आईएनसी.

गुओ एण्ड गुओ (2008, 15थ अगस्त), *चाइना इन सर्च ऑफ ए हार्मोनियस सोसाइटी*, न्यू यॉर्क : लेक्सिंग्टन बुक्स

रूइपिंग फैन (2010, 11 मार्च), रिकंस्ट्रस्टक्शन कंफ्यूशियनिज़्म : रिथिंकिंग मोरलिटी आफ्टर द वेस्ट, *स्प्रिंगर साइंस एण्ड बिजनेस मीडिया* https://www.academia.edu/5282393/Modern_Confucianism_and_the_Concept_of_Harmony

चाइनाज पार्ट लीडरशिप डिक्लेयर्स न्यू प्रायोरिटी : 'हार्मोनियस सोसाइटी', *द वॉशिंगटन पोस्ट*, अक्टूबर 12, 2016, *रिट्राइव्ड 2011-01-20*

शेक, डी.टी.एल., (2001), पर्सेप्शन्स ऑफ हैप्पी फैमिलीज अमंग्स्ट चाइनीज ऐडोल्सेंट्स एण्ड दीयर पैरेंट्स : इम्प्लिकेशंस फॉर फैमिली थिरेपी, *फैमिली थिरैपी*, 28, 73-103

टैन, सोर-हून (2003), कंफ्यूशियन डिमोक्रेसी : ए डीवियन रिकंस्ट्रक्शन, न्यू यॉर्क : स्टेट यूनिवर्सिटी न्यू यॉर्क प्रेस

ट्रीअन्डीज, एच.सी. (1995), *इंडिविजुअलिज्म एण्ड कलेक्टिव*, बोल्डर, सीओ : वेस्टव्यू प्रेस

ली, एम. वाय. एण्ड एमजेल्डे-मोस्से, एल. (2004), कल्चरल डिस्सोनेंस अमंग जनरेशंस : ए सोल्यूशन फोकस्ड एप्रोच विद ईस्ट एशियन इल्डर्स एण्ड दीयर फैमिलीज, *जर्नल ऑफ मैरिटल एण्ड फैमिली थिरैपी*

ऐलेन, आर.ई., (2006), *प्लेटो : द रिपब्लिक* न्यू हैवेन : येल यूनिवर्सिटी प्रेस

ज़ॉन्ग, वू (2006), अक्टूबर 110, चाइनाज येर्न्स फॉर एचयूज 'हार्मोनियस सोसाइटी', *एशिया टाइम्स.*

वेब लिंक्स

www.gse.harvard.edu/news-impact/2013/09/educat ions-impact-on-social-harmony

www.goffs.herts.sch.uk

www.jubilee-centre.org/document.php

www.un-documents.net/a60r11.htm

12.14 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

1) आपके उत्तर में सद्भाव के पश्चिमी और भारतीय विचार की व्याख्या की जानी चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

1) अपने उत्तर में सामाजिक सहयोग और आपसी साझेदारी के महत्व पर प्रकाश डालें।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

1) अपने उत्तर में व्यक्तिगत और संस्थागत दोनों स्तर पर सहायता को शामिल करें।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

1) आपके उत्तर में धार्मिक सद्भाव के विचार, विविधता के लिए सम्मान शामिल होना चाहिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 13 शिक्षा

संरचना

13.1 प्रस्तावना

लक्ष्य एवं उद्देश्य

13.2 शिक्षा का अर्थ

13.2.1 शिक्षा का संकीर्ण और व्यापक अर्थ

13.2.1.1 संकीर्ण अर्थ में शिक्षा

13.2.1.2 व्यापक अर्थ में शिक्षा

13.3 शिक्षा का उद्देश्य

13.3.1 शिक्षा के उद्देश्य का ऐतिहासिक उद्भव

13.3.2 शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य

13.4 शिक्षा का आधार

13.4.1 शिक्षा का दार्शनिक आधार

13.4.2 शिक्षा के समाजिक आधार

13.4.3 शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार

13.5 वर्तमान स्थिति

13.6 गाँधी की शिक्षा योजना

13.7 सारांश

13.8 संदर्भ ग्रंथ

13.9 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

13.1 प्रस्तावना

आजकल शिक्षा प्रमुख बन गई है क्योंकि इसमें अधिकांश लोग इससे जुड़े होते हैं। इसके अलावा, इसे मानव जीवन से अलग नहीं किया जा सकता है। पुरुषों और महिलाओं दोनों को शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता है। शिक्षा के लिए कोई सीमा न होने के कारण उन्हें अपनी इच्छानुसार प्राप्त करने का अधिकार है। कोई भी व्यक्ति किसी भी उम्र का क्यों न हो, वह अभी भी अपने बचे हुए जीवन में शिक्षा ग्रहण कर सकता है। इसलिए, शिक्षा प्राप्त करने में बहुत देर होने जैसी कोई बात नहीं होती।

शिक्षा ही एकमात्र ऐसा पुल है जो लोगों को उनके बेहतर भविष्य की ओर ले जाता है। एक राष्ट्र के सुधार में शिक्षा एक अनिवार्य हिस्सा है। यदि किसी देश के पास उचित शिक्षा नहीं है, तो उसे उन राष्ट्रों द्वारा छोड़ दिया जा सकता है जो शिक्षा का समर्थन करने वाले देशों की प्रशंसा करते हैं।

किसी देश के विकास का निर्धारण इस बात से किया जा सकता है कि उसके नागरिक अच्छी तरह से शिक्षित हैं या नहीं। जिस देश की शिक्षा की गुणवत्ता जितनी बेहतर होगी, उतनी ही तेजी से इसका विकास होगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वैश्विक समस्याएं जो किसी देश का सामना कर रही हैं, चाहे वह गरीबी उन्मूलन, शांति का निर्माण, या पर्यावरणीय ऊर्जा की समस्याएं हों, समाधान में हमेशा शिक्षा शामिल होगी। बिना शिक्षा के इसका प्रबंधन कभी नहीं होता।

डॉ. आशु पसरीचाअध्यक्ष, गांधीवादी और शांति अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

लक्ष्य एवं उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप यह समझने में सक्षम होंगे

- शिक्षा की अवधारणा और उसका अर्थ समझना
- शिक्षा के लक्ष्य और उद्देश्य समझना

13.2 शिक्षा का अर्थ

अंग्रेजी में "शिक्षा" शब्द को दो लैटिन शब्दों म्कनबंतम (Educere) और Educatum से लिया गया है। "Educare" का अर्थ है प्रशिक्षण। इसका अर्थ ऊपर लाना या बाहर ले जाना या बाहर निकालना भी है, भीतर से बाहर की ओर प्रणोदन। शब्द "Educatum" शिक्षण के कार्य को दर्शाता है। यह शिक्षण के सिद्धांतों और अभ्यास पर प्रकाश डालता है। Educare या Educere शब्द मुख्य रूप से बच्चे के अव्यक्त संकायों के विकास को इंगित करता है। लेकिन बच्चा इन संभावनाओं को नहीं जानता है। वह शिक्षक होता है जो इनको जान सकता है और उन शक्तियों को विकसित करने के लिए उचित तरीके अपना सकता है।

हिंदी में, "शिक्षा" शब्द संस्कृत शब्द "शाश" से आया है। "शाश" का अर्थ अनुशासन, नियंत्रण करना, आदेश देना, निर्देशित करना, शासन करना आदि है। पारंपरिक अर्थों में शिक्षा का अर्थ है किसी व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करना या अनुशासित करना। संस्कृत में "शिक्षा" सूत्र साहित्य की एक विशेष शाखा है, जिसकी छह शाखाएँ हैं - शिक्षा, छन्द, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प। वेदों को सीखने के लिए सूत्र साहित्य की रचना की गई थी। शिक्षा उच्चारण के नियमों को निरूपित करती है। संस्कृत में एक और शब्द है, जो शिक्षा की प्रकृति पर प्रकाश डालता है, यह "विद्या" है जिसका अर्थ है ज्ञान। शब्द "विद्या" की उत्पत्ति "विद" अर्थात ज्ञान से हुई है।

13.2.1 शिक्षा के संकीर्ण और व्यापक अर्थ

13.2.1.1 संकीर्ण अर्थ में शिक्षा

अपने संकीर्ण अर्थ में, स्कूल में सिखाए जाने को शिक्षा कहते हैं। इस प्रक्रिया में, समाज के बुजुर्ग शिक्षण के निर्धारित तरीकों के माध्यम से बच्चों को पूर्व-संगठित जानकारी देकर पूर्वनिर्धारित बिंदुओं को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इसका उद्देश्य स्कूल में प्रवेश लेने वाले बच्चों का मानसिक विकास करना है। जॉन स्टुअर्ट मिल का विचार है कि "संस्कृति जो प्रत्येक पीढ़ी उद्देश्यपूर्ण रूप से अपने उत्तराधिकारी को देती है, ताकि कम से कम उन्हें उतना योग्य बनाया जा सके, और यदि संभव हो तो सुधार करके उसका स्तर बढ़ा सकें।"

प्रोफेसर ड्रेवर के अनुसार, "शिक्षा" एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें और जिसके द्वारा युवा के ज्ञान, चरित्र और व्यवहार को आकार दिया जाता है और ढाला जाता है।

शिक्षा, संकीर्ण अर्थ में, निर्देश के समकक्ष मानी जाती है। इसमें "विशिष्ट प्रभाव" होते हैं, जिसे सचेत रूप से बच्चे के विकास के लिए किसी स्कूल या कॉलेज या किसी संस्थान में डिजाइन किया जाता है।

13.2.1.2 व्यापक अर्थ में शिक्षा

अपने व्यापक अर्थों में, शिक्षा व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास है। इस अर्थ में शिक्षा में उन सभी अनुभवों का समावेश होता है, जो व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।

इसलिए, शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति खुले और अनियंत्रित वातावरण में अपने झुकाव से सांकेतिक रूप से अपना आत्म-निर्माण करता है। इस तरह, शिक्षा विकास के वातावरण की एक जीवन भर की प्रक्रिया है।

एस एस मैकेंजी के अनुसार, "व्यापक अर्थों में, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन भर चलती है, और जीवन के लगभग हर अनुभव द्वारा इसे बढ़ावा दिया जाता है।" जबकि डुमविले के अनुसार "शिक्षा अपने व्यापक अर्थों में सभी प्रभावों को शामिल करती है, जिसे पालने से कब्र तक जाने के दौरान व्यक्ति महसूस करता है।"

जॉन डेवी कहते हैं, "शिक्षा, अपने व्यापक अर्थ में, सामाजिक निरंतरता का साधन है।"

व्यापक अर्थों में शिक्षा एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। यह एक बच्चे के जन्म के साथ शुरू होता है और उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त होता है। यह एक सतत प्रक्रिया है। निरंतरता जीवन का नियम है।

शिक्षा, व्यापक अर्थों में, सजीव द्वारा, सजीव को, जीवन के माध्यम से जीने का संचरण है।" शिक्षा व्यक्तित्व के संतुलित सर्वांगीण सामंजस्यपूर्ण विकास का एक साधन है। व्यक्तित्व में न केवल शरीर और मन बल्कि आत्मा भी शामिल होती है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) शिक्षा के अर्थ की व्याख्या करें।

....

....

....

....

....

13.3 शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा के उद्देश्य निश्चित, शाश्वत और सार्वभौमिक नहीं होते हैं। ये परिवर्तनशील और सापेक्ष होते हैं। शिक्षा के उद्देश्यों की प्रकृति उचित रूप से जीवन का आदर्शवाद और व्यावहारिकता की अंतर्दृष्टि के दो विशेष तरीकों के प्रकाश में समझी जा सकती है। दृष्टि एकमुश्त, चरम, विमोचन और व्यापक गुणों के लिए बनी हुई है। यह जीवन की उच्च मान्यताओं की वकालत करता है, जो प्रकृति में अनिवार्य रूप से गहरा है। यह जीवन के उच्च आदर्शों की वकालत करता है, जो मुख्य रूप से आध्यात्मिक हैं। आदर्शवाद "ज्ञान की खातिर ज्ञान" की याचना करता है। एक आदर्शवादी समाज में, शिक्षा मनुष्य के सामान्य और अच्छे सुधार के लिए है। आदर्शवाद के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य आशावादी होता है और वे पूर्वगामी, कुल, अपरिवर्तनीय और सभी प्रकार से समावेशी हैं। आदर्शवादी शिक्षा का उद्देश्य इन पूर्व-मौजूदा, पूर्ण और सार्वभौमिक मूल्यों को महसूस करना है। यह "पूर्ण जीवन यापन के लिए शिक्षा" है।

व्यावहारिकता जीवन के साथ वैसा ही व्यवहार करती है जैसा वह है और जैसा कि उसे होना चाहिए। इसे जीवन जीने का व्यावहारिक तरीका भी कहा जाता है। यथार्थवाद में

जीवन की मौजूदा या प्रचलित सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति खत्म हो जाती है। जीवन की मौजूदा स्थितियां व्यावहारिक शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करती हैं। व्यावहारिकता पूर्ण और शाश्वत मूल्यों में विश्वास नहीं करती है: जीवन का दर्शन हमेशा शिक्षा के उद्देश्यों में परिलक्षित होता है।

13.3.1 शिक्षा के उद्देश्य के ऐतिहासिक उद्भव

प्राचीन भारत में जीवन का आदर्श आध्यात्मिक था। शैक्षिक उद्देश्य जीवन की अवधारणा द्वारा निर्धारित की गई थी। इस प्रकार, शिक्षा का उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार या ब्रह्म या पूर्ण की प्राप्ति था।

प्राचीन स्पार्टा में शिक्षा व्यक्तिवादी नहीं बल्कि समाजवादी थी। प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए नहीं, बल्कि राज्य के लिए पैदा हुआ था। राज्य स्वयं एक विद्यालय था। शिक्षा की इस राज्य-नियंत्रित प्रणाली का तात्कालिक उद्देश्य युवाओं को घर से दूर सैन्य बैरकों में प्रशिक्षित करना, एक साहसी शरीर में साहसी दिमाग विकसित करना, साहसी सैनिकों का उत्पादन करना था। इस प्रकार व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अनुमति नहीं थी। शिक्षा मुख्य रूप से भौतिक थी।

एथेंस में, व्यक्तिगत शिक्षा का बोलबाला था। एथेंस की शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और सौंदर्य के सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व का विकास था। इसने व्यक्ति और राज्य के बीच, शारीरिक और मानसिक विकास के बीच, विचार और क्रिया के बीच सामंजस्य स्थापित किया। इसका तात्कालिक उद्देश्य एक सुंदर शरीर में एक सुंदर दिमाग विकसित करना था।

मध्यकाल के दौरान, शिक्षा पूरी तरह से एक पवित्र मुद्दा था। जादू, तपस्या, वीरता और विद्वता ने प्रत्येक क्षेत्र में जीवन को अभिभूत कर दिया। शिक्षा चरित्र और धार्मिक दृष्टिकोण में पूरी तरह से औपचारिक थी।

समय के साथ यह उदारवादी मानवतावादी शिक्षा एक कृत्रिम और औपचारिक प्रणाली में बदल गई। इस कृत्रिम शिक्षा के खिलाफ बेकन और कॉमेनियस के नेतृत्व में यथार्थवादी आंदोलन शुरू हुआ। उनके अनुसार, अज्ञान सभी बुराइयों की जड़ में था। इसलिए, उन्होंने सार्वभौमिक और एकीकृत ज्ञान के प्रसार का अनुरोध किया।

18 वीं शताब्दी में शिक्षा का एक सच्चा व्यक्तिवादी आदर्श अस्तित्व में आया। जे.जे. रूसो ने शिक्षा की मौजूदा कृत्रिम और ध्वस्त व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह किया। उन्होंने न केवल आम लोगों के लिए बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में बच्चे के कारण का भी समर्थन किया। इस प्रकार, शिक्षा में प्रकृतिवाद अस्तित्व में आया।

13.3.2 शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य

व्यावसायिक उद्देश्य

व्यावसायिक उद्देश्य को "उपयोगितावादी उद्देश्य या भोजन के उद्देश्य" के रूप में भी जाना जाता है। शिक्षा को बच्चे को अपनी आजीविका कमाने में मदद करनी चाहिए।

ज्ञान या जानकारी का उद्देश्य

शिक्षा का ज्ञान या जानकारी रखने वाले शिक्षाविद् शक्तिशाली तर्कों के साथ अपने रुख को सही ठहराते हैं। उनका तर्क है कि ज्ञान सभी सही कार्यों के लिए अपरिहार्य है और यह सारी शक्ति का स्रोत है। "यह ज्ञान ही होता है जो एक यथार्थवादी को किसी भी पेशे में दूरदर्शी और सफल बनाता है।"

सांस्कृतिक उद्देश्य

ज्ञान के उद्देश्य के संकीर्ण दृष्टिकोण के पूरक के लिए शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्य का सुझाव दिया गया है।

चरित्र निर्माण या नैतिक उद्देश्य

चरित्र जीवन का सार होता है और यही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। विवेकानंद और गाँधी दोनों ने शिक्षा में चरित्र निर्माण पर जोर दिया। चरित्र निर्माण या नैतिक शिक्षा का संबंध मनुष्य के संपूर्ण आचरण से है।

आध्यात्मिक उद्देश्य

आदर्शवादी विचारकों ने कहा है कि व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य होना चाहिए।

समेकित उद्देश्य

समायोजन मानव जीवन का प्राथमिक नियम है। पर्यावरण के समायोजन के बिना कोई भी जीवित नहीं रह सकता है। जीवन समायोजन का संघर्ष है।

अवकाश का उद्देश्य

किसी व्यक्ति के "खाली और निर्लिप्त समय" को आमतौर पर अवकाश के रूप में जाना जाता है। यह ऐसा समय होता है जिसे हम रचनात्मक तरीके से उपयोग कर सकते हैं। आराम हमारे जीवन को गतिशील और आकर्षक बना सकता है।

नागरिक प्रशिक्षण का उद्देश्य

एक नागरिक को विविध नागरिक कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को निभाना पड़ता है। बच्चों को शिक्षा द्वारा इतना प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि वे अपने विभिन्न नागरिक कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वहन कर सकें।

पूर्ण जीवन का उद्देश्य

कुछ शिक्षाविदों ने शिक्षा के एक व्यापक उद्देश्य की आवश्यकता पर जोर दिया है। इस दृष्टिकोण ने दो उद्देश्यों का विकास किया है- "पूर्ण जीवन का उद्देश्य" और "सामंजस्यपूर्ण विकास का उद्देश्य।"

सौहार्दपूर्ण विकास का उद्देश्य

शिक्षाविदों का मत है कि एक बच्चे को विरासत में मिली सभी शक्तियों और क्षमताओं को एक साथ सौहार्दपूर्ण तरीके से विकसित किया जाना चाहिए। गाँधीजी सौहार्दपूर्ण विकास के प्रबल पक्षधर हैं।

सामाजिक उद्देश्य

कोई भी व्यक्ति सामाजिक संदर्भ के बिना न जी सकता है और न प्रगति कर सकता है। अकेला जीवन मनुष्य के लिए असहनीय हो गया और इसीलिए उसने समाज का निर्माण किया। व्यक्तिगत सुरक्षा और कल्याण समाज पर निर्भर करते हैं। व्यक्तिगत प्रगति सामाजिक प्रगति द्वारा तय होती है।

13.4 शिक्षा का आधार

आधार वे स्तंभ हैं जिन पर भवन निहित होता है। शिक्षा के भवन में भी कई आधार हैं।

13.4.1 शिक्षा का दार्शनिक आधार

इस दुनिया की स्थापना के बाद से मनुष्य वास्तविकता को जानने का लगातार प्रयास करता रहा है। यह "जानना" ही दर्शन है। यह दर्शनशास्त्र है, जिसने मनुष्य और उसकी गतिविधि ा की सामान्य रूप से व्याख्या की है। दर्शन के बिना मानव जीवन को ठीक से नहीं समझा जा सकता है। दर्शन और जीवन के बीच घनिष्ठ संबंध है। जीवन की अवधारणा दर्शन से उत्पन्न होती है। दर्शन अनिच्छा देता है और सत्य के बाद जांच की आत्मा का निर्माण करता है। जीवन और शिक्षा अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं।

व्युत्पत्ति रूप से, दर्शन शब्द दो ग्रीक शब्दों "फिलो" (प्रेम) और "सोफिया" (ज्ञान) से लिया गया है जिसका अर्थ है ज्ञान का प्रेम। ज्ञान और बुद्धिमत्ता एक समान नहीं है। ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन बुद्धिमत्ता सत्य का दर्शन है। दर्शन सत्य के प्रति प्रेम और जीवन की आवश्यकता है। शब्द के व्यापक अर्थों में शिक्षा ही जीवन है और संकीर्ण अर्थ में यह पूर्ण जीवन जीने की तैयारी है।

13.4.2 शिक्षा का सामाजिक आधार

शिक्षा व्यक्तियों के गठित समाज में होती है। यह एक सामाजिक प्रक्रिया है। यह एक सामाजिक क्षमता है और इसके अलावा सामाजिक जोखिम है। एक स्कूल आम जनता द्वारा बनाया जाता है और आम जनता स्कूल द्वारा बनाई और ढाली जाती है। इस तरह, शिक्षा समाज का एक कारण और उत्पाद दोनों है। यह आम जनता में शुरू होता है और इसे आम जनता की आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करना चाहिए। इस प्रकार शिक्षा और समाज के बीच एक अंतरंग संबंध है।

समाजशास्त्र "सोसाइटी" और "लोगस" यानि "समाज" और "विज्ञान" से बना है। इसलिए समाज के वैज्ञानिक अध्ययन को आमतौर पर समाजशास्त्र के रूप में जाना जाता है। समाज व्यक्तियों के संयोजन मात्र से कुछ अधिक है। इसमें व्यक्तियों और समूहों के बीच बातचीत और अंतर्संबंध शामिल होते हैं।

13.4.3 शिक्षा का मनोवैज्ञानिक आधार

मनोविज्ञान ने आधुनिक शिक्षा के विकास को बहुत प्रभावित किया है। मनोविज्ञान और शिक्षा के बीच बुनियादी संबंध और रिश्ते कई गुना हैं। शैक्षिक सिद्धांत और अभ्यास मानव व्यवहार की प्रकृति से अनुकूलित होते हैं।

मनोविज्ञान शब्द की उत्पत्ति दो शब्दों "Psyche" जिसका अर्थ मानस और "Logos" जिसका अर्थ है विज्ञान, से हुई है। इसलिए मनोविज्ञान मन का विज्ञान है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) शिक्षा के आधार और उद्देश्य क्या हैं?

....

....

....

....

13.5 वर्तमान स्थिति

स्वतंत्रता के बाद एक बड़ी आबादी को शिक्षा प्रदान करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। पूरे देश में निरक्षरता व्यापक स्तर पर है। सरकार अपने लोगों के लिए बुनियादी सुविधाओं और अन्य सुविधाओं का लाभ देने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध थी। इसलिए इन कामों को पूरा करने के लिए, इसने अलग-अलग सलाहकार समूहों और आयोगों का गठन किया है। इस प्रयास के लिए विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग नाम का पहला आयोग 1948 में नियुक्त किया गया था। बाद में, 1952 में, माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन किया गया था। भारत में शिक्षा का विकास विशेष रूप से स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान में निहित लक्ष्यों के अनुसार किया गया है। शिक्षा को भारत के संविधान में प्रत्येक नागरिक के मौलिक अधिकार के रूप में माना गया है। संविधान को अपनाने के बाद से, सरकार समाज के सभी वर्गों को शिक्षा का लाभ देने के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास कर रही है।

प्राथमिक शिक्षा का विकास

संसद ने प्राथमिक शिक्षा को 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मौलिक अधिकार बनाने के लिए संविधान में 86 वां संशोधन वर्ष 2002 में पारित किया है।

सर्व शिक्षा अभियान

सर्वशिक्षा अभियान (एसएसए) की योजना 2001 में शुरू की गई थी। एसएसए के लक्ष्य निम्नानुसार हैं : (i) स्कूल/शिक्षा गारंटी योजना केंद्र/ब्रिज कोर्स में 2003 तक सभी 6 से 14 आयु के बच्चे। (ii) सभी 6 से 14 उम्र के बच्चे 2007 तक पांच साल की प्राथमिक शिक्षा पूरी करते हैं (iii) 2010 तक सभी 6 से 14 आयु के बच्चे स्कूली शिक्षा के आठ साल पूरे कर लेते हैं। (iv) जीवन के लिए शिक्षा पर जोर देने के साथ संतोषजनक गुणवत्ता वाले प्राथमिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करें (v) सभी लिंग और सामाजिक श्रेणी के अंतरालों को पाटें 2007 तक प्राथमिक स्तर पर और 2010 तक माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर (vi) 2010 तक सार्वभौमिक प्रतिधारण। इस कार्यक्रम में पूरे देश की लड़कियों, एससी/एसटी और अन्य बच्चों की शिक्षा आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है।

शिक्षा गारंटी योजना और वैकल्पिक एवं अभिनव शिक्षा

शिक्षा गारंटी योजना और वैकल्पिक एवं अभिनव शिक्षा (ईजीएस और एआईई), माध्यमिक शिक्षा के तहत स्कूली बच्चों को लाने के लिए सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) का एक महत्वपूर्ण घटक है। ईजीएस दुर्गम बस्ती को संबोधित करता है जहां एक किमी के दायरे में 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के कम से कम 15 से 25 बच्चों के लिए कोई औपचारिक स्कूल नहीं है। अत्यधिक वंचित बच्चों की विशिष्ट श्रेणियों जैसे कि, सड़कों पर जिंदगी बसर करने वाले बच्चे, आप्रवासित बच्चे, कामकाजी बच्चे, कठिन परिस्थितियों में रहने वाले बच्चे और 9 से अधिक आयु वर्ग के बच्चों में विशेष रूप से किशोर लड़कियों के लिए वैकल्पिक शिक्षा हस्तक्षेप, जिसे पूरे देश में ईजीएस और एआईई के तहत समर्थन दिया जा रहा है।

मिड-डे मील योजना

प्राथमिक शिक्षा के लिए पोषण संबंधी सहायता का राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपी-एनएसपीई), जिसे आमतौर पर मिड-डे मील योजना के रूप में जाना जाता है, औपचारिक रूप से 21 अगस्त, 1995 को शुरू किया गया था। कार्यक्रम का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण को बढ़ते नामांकन, उपस्थिति और अवधारणा, और सरकारी, स्थानीय निकाय और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में पढ़ने वाले प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के पोषण की स्थिति में

सुधार के साथ बढ़ावा देना है। अक्टूबर 2002 से, कार्यक्रम को शिक्षा गारंटी योजना (ईजीएस) और अन्य वैकल्पिक और अभिनव शिक्षा (एआईई) अध्ययन केंद्रों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए भी विस्तारित किया गया है।

जिला प्राथमिक शिक्षा योजना

प्राथमिक शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने और प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डीपीईपी) की केंद्र प्रायोजित योजना 1994 में शुरू की गई थी। डीपीईपी पहुँच को बनाए रखने, सीखने की उपलब्धि में सुधार लाने और सामाजिक समूहों के बीच असमानताओं को कम करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाता है। क्षेत्र-नियोजन के दृष्टिकोण के रूप में जिले के साथ नियोजन की इकाई के रूप में, स्थानीय परिस्थितियों के लिए महत्वपूर्ण संवेदनशीलता और समुदाय की पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करता है।

ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड

ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (ओबीबी) की योजना देश के प्राथमिक स्कूलों में उपलब्ध मानव और भौतिक संसाधनों में सुधार के उद्देश्य से 1987-88 में शुरू की गई थी। हर मौजूदा प्राथमिक विद्यालय के लिए कम से कम दो बड़े कमरे, कम से कम दो शिक्षक और आवश्यक शिक्षण सामग्री का प्रावधान योजना के घटक थे। इस योजना को 2002-2003 से सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) में शामिल कर लिया गया है।

लोक जुंबिश योजना

राजस्थान में स्वीडिश इंटरनेशनल डेवलपमेंट एजेंसी (एसआईडीए) की सहायता से एक अभिनव परियोजना "लोक जुंबिश" शुरू की गई थी ताकि लोगों की भागीदारी के माध्यम से सभी के लिए शिक्षा प्राप्त की जा सके।

शिक्षा कर्मी योजना

शिक्षा कर्मी योजना (एसकेपी) का उद्देश्य राजस्थान में सुदूरवर्ती और सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े गाँवों में लड़कियों को दिए जाने वाले प्राथमिक शिक्षा और सार्वभौमिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाना है।

महिला समाख्या

1989 में शुरू किया गया महिला समाख्या कार्यक्रम (महिलाओं की समानता के लिए शिक्षा) ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए एक ठोस कार्यक्रम है, विशेषकर सामाजिक और आर्थिक रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदाय की महिलाओं का। इसे नौ राज्यों के 60 जिलों में 14,000 से अधिक गांवों में लागू किया गया है।

जनशाला कार्यक्रम

जनशाला (जीओआई-यूएन) कार्यक्रम भारत सरकार और पाँच संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों - UNDP, UNICEF, UNESCO, ILO और UNFPE का एक सहयोगात्मक प्रयास है, जो यूईई को प्राप्त करने की दिशा में चल रहे प्रयासों को सहायता प्रदान करता है। जनशाला, एक समुदाय आधारित प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, जिसका उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाना है, विशेषकर वंचित समुदायों, हाशिए पर रहने वाले समूहों, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यकों, कामकाजी बच्चों और विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए।

अध्यापक शिक्षा में विकास

जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई) और कार्ययोजना कार्यक्रम (पीओए) 1986 की परिकल्पना में केंद्र द्वारा प्रायोजित अध्यापक शिक्षा के पुनर्गठन की योजना बनाई गई।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) की स्थापना अगस्त 1995 में देश भर में अध्यापक शिक्षा प्रणाली के नियोजित और समन्वित विकास को प्राप्त करने और अध्यापक शिक्षा के मानदंडों और मानकों के नियमन और उचित रखरखाव के लिए की गई थी।

राष्ट्रीय बाल भवन

राष्ट्रीय बाल भवन (एनबीबी), नई दिल्ली मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा पूरी तरह से वित्त पोषित एक स्वायत्त निकाय है, जिसे 5 से 16 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए स्थापित किया गया था। राष्ट्रीय बाल भवन का उद्देश्य आत्मिक चुनौती, प्रयोग, नवाचार और सृजन करना है। राष्ट्रीय बाल भवन की स्थापना 1956 में पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा की गई थी।

अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के शिक्षा का विकास

संविधान के अनुच्छेद 46 में कहा गया है कि, "राज्य विशेष देखभाल के साथ, कमजोर वर्गों के लोगों की विशेष रूप से अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा और आर्थिक हितों को बढ़ावा देगा और उन्हें सामाजिक अन्याय और सामाजिक शोषण के सभी रूपों से बचाएगा।"

सर्व शिक्षा अभियान

सर्व शिक्षा अभियान, राज्य के साथ साझेदारी में, समयबद्ध एकीकृत दृष्टिकोण के माध्यम से सार्वभौमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण (यूईई) के लंबे पोषित लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक ऐतिहासिक प्रगति है।

जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डीपीईपी)

योजना का जोर लड़कियों, एससी/एसटी, कामकाजी बच्चे, शहरी वंचित बच्चे, दिव्यांग बच्चे आदि जैसे वंचित समूहों पर है।

जनशाला

जनशाला का उद्देश्य एससी, अल्पसंख्यकों, कामकाजी बच्चों और विशेष जरूरतों वाले बच्चों को प्राथमिक शिक्षा प्रदान करके यूईई के लिए प्रयासों का समर्थन करना है।

महिला समाख्या

महिला समाख्या शैक्षिक पहुंच और उपलब्धि में पारंपरिक लिंग-असंतुलन को संबोधित करती है। इसमें महिलाओं (विशेष रूप से सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित और हाशिए पर रहने वाले समूहों से) को संबोधित करने और अस्तित्व के लिए परंपरा और संघर्ष से निपटने में सक्षम होना शामिल है, जो उनके सशक्तीकरण को रोकते हैं।

प्राथमिक स्तर पर लड़कियों की शिक्षा का राष्ट्रीय कार्यक्रम

सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) की मौजूदा योजना के तहत एनपीईजीईएल, प्राथमिक स्तर पर विशेषाधिकार के तहत वंचित लड़कियों की शिक्षा के लिए अतिरिक्त घटक प्रदान करता है।

शिक्षा कर्मी योजना (एसकेपी)

एसकेपी का उद्देश्य राजस्थान में दूरस्थ और सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े गाँवों में लड़कियों की प्राथमिक शिक्षा के साथ सार्वभौमिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार करना है।

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय की योजना के तहत, मुख्य रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यकों से संबंधित लड़कियों के लिए प्राथमिक स्तर पर बोर्डिंग सुविधाओं के साथ कठिन क्षेत्रों में 750 आवासीय विद्यालय स्थापित किए जा रहे हैं।

जन शिक्षण संस्थान (जेएसएस)

जेएसएस या पीपुल्स एजुकेशन इंस्टीट्यूट एक बहुप्रतिक्षित या बहुमुखी वयस्क शिक्षा कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य लाभार्थियों के व्यावसायिक कौशल और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

केन्द्रीय विद्यालय (केवी)

नए प्रवेश में क्रमशः 15 प्रतिशत और 7.5 प्रतिशत सीटें अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों से बारहवीं कक्षा तक कोई शिक्षण शुल्क नहीं लिया जाता है।

नवोदय विद्यालय (एनवी)

एससी और एसटी वर्ग के बच्चों के पक्ष में सीटों का आरक्षण संबंधित जिले में उनकी आबादी के अनुपात में प्रदान किया जाता है बशर्ते कि ऐसा कोई आरक्षण 22.5 प्रति शत के राष्ट्रीय औसत से कम न हो।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान (एनआईओएस)

एससी/एसटी छात्रों को प्रवेश शुल्क में ब्रिज कोर्स के लिए 200 रुपये, माध्यमिक पाठ्यक्रमों के लिए 250 रुपये और वरिष्ठ माध्यमिक पाठ्यक्रमों के लिए 300 रुपये की रियायत दी जाती है।

स्कूलों में विकास की गुणवत्ता में सुधार

दसवीं योजना के दौरान, एक समग्र केंद्र प्रायोजित योजना "स्कूलों में गुणवत्ता सुधार" शुरू करने का निर्णय लिया गया है।

पर्यावरण उन्मुखी स्कूल शिक्षा

1988-89 में केंद्र प्रायोजित योजना "पर्यावरण उन्मुखी स्कूल शिक्षा" शुरू की गई थी। यह योजना स्थानीय पर्यावरणीय परिस्थितियों वाले स्कूलों में शैक्षिक कार्यक्रमों के एकीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रायोगिक और अभिनव कार्यक्रमों के संचालन के लिए स्वैच्छिक एजेंसियों को सहायता की परिकल्पना करती है।

स्कूलों में योग का परिचय

स्कूलों में योग के परिचय के लिए एक केंद्र प्रायोजित योजना 1989-90 में शुरू की गई थी। यह योजना राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों/गैर-सरकारी संगठनों को वित्तीय सहायता देने के उद्देश्य से है।

नवोदय विद्यालय समिति

शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति - 1986 ने देश के प्रत्येक जिले में मॉडल स्कूल की स्थापना की परिकल्पना की। एक योजना तैयार की गई जिसके तहत सह-शिक्षा स्कूलों की स्थापना का निर्णय लिया गया।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

सरकार ने 1962 में दूसरे वेतन आयोग की सिफारिशों पर केंद्रीय विद्यालय संगठन की योजना को मंजूरी दी। प्रारंभ में, विभिन्न राज्यों में 20 रेजिमेंटल स्कूलों को केंद्रीय विद्यालय के रूप में लिया गया था। 1965 में, केंद्रीय विद्यालय संगठन नामक एक स्वायत्त निकाय की स्थापना केंद्रीय कर्मचारियों के लिए की गई थी, जो केंद्रीय कार्मिकों के लिए रक्षा कार्मिक और अर्ध-सैन्य बल के लिए आम कार्यक्रम प्रदान करके बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए केंद्रीय विद्यालय की स्थापना और निगरानी करते थे।

दिव्यांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा की दिशा में विकास

आईईडीसी की योजना 1974 में शुरू की गई थी, जो राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों / गैर-सरकारी संगठनों को सामान्य स्कूलों में दिव्यांग बच्चों को किताबें और स्टेशनरी, यूनिफॉर्म, ट्रांसपोर्ट अलाउंस, एस्कॉर्ट अलाउंस, रीडर्स अलाउंस, दिव्यांग बच्चों को पढ़ाने के लिए भर्ती किए गए शिक्षक के वेतन, उपकरण आदि सुविधाओं की दिशा में 100 प्रति शत वित्तीय सहायता के लिए प्रदान की गई थी।

उत्तर पूर्वी क्षेत्र में शैक्षिक विकास

उत्तर पूर्वी क्षेत्र में आठ राज्यों का साक्षरता स्तर उच्च है और यह भाषाई विविधता के साथ जातीय सांस्कृतिक विरासत में समृद्ध है।

विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षा में विकास

वर्तमान में भारत में 342 विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर के संस्थान हैं जिनमें 18 केंद्रीय विश्वविद्यालय, 211 राज्य विश्वविद्यालय, 95 डीम्ड विश्वविद्यालय, 5 राज्य अधिनियम के तहत स्थापित संस्थान और राष्ट्रीय महत्व के 13 संस्थान शामिल हैं, जिनमें भारत के 1800 महिला कॉलेज सहित लगभग 17,000 कॉलेज शामिल हैं।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

सितंबर 1985 में स्थापित इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) देश के शैक्षिक पैटर्न में मुक्त विश्वविद्यालय और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने और ऐसी प्रणालियों में मानकों के समन्वय और निर्धारण के लिए जिम्मेदार है।

अल्पसंख्यक शिक्षा

1992 में अद्यतन राष्ट्रीय नीति 1986 में, समानता और सामाजिक न्याय के हित में शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों की शिक्षा पर अधिक ध्यान देने की परिकल्पना की गई है। कार्रवाई के संशोधित कार्यक्रम (पीओए) 1992 के अनुसरण में, दो नई केंद्र-प्रायोजित योजनाएं, अर्थात् (i) शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों के लिए क्षेत्र गहन कार्यक्रम की योजनाय और (ii) मदरसा शिक्षा के आधुनिकीकरण के लिए वित्तीय सहायता की योजना 1993-94 के दौरान शुरू की गई थी।

तकनीकी शिक्षा

देश में तकनीकी शिक्षा प्रणाली इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, वास्तुकला, फार्मेसी, आदि में पाठ्यक्रम को शामिल करती है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय स्नातक, स्नातकोत्तर और अनुसंधान स्तरों पर कार्यक्रमों को पूरा करता है। केंद्रीय स्तर पर तकनीकी शिक्षा प्रणाली में अन्य शामिल निम्नलिखित हैं :- a) तकनीकी शिक्षा के लिए अखिल भारतीय परिषद (एआईसीटीई), जो तकनीकी शिक्षा प्रणाली के समुचित नियोजन और समन्वित विकास के लिए सांविधिक निकाय है; b) सात भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) c) छह भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) d) भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बैंगलोर e) भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंधन संस्थान (आईआईटीएम), ग्वालियर भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईआईटी), इलाहाबाद और अमेठी में इसका विस्तार परिसर और पंडित द्वारका प्रसाद मिश्रा इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी डिजाइन एंड मैन्युफैक्चरिंग, जबलपुर और f) अठारह राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) (आरईसी से 100 प्रतिशत केंद्रीय वित्त पोषण में परिवर्तित)।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) हाल के वर्षों में शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर करने के लिए भारत सरकार की योजनाएं/पहलों की चर्चा करें।

....

....

....

....

....

13.6 गाँधी की शिक्षा योजना

गाँधीवादी रचनात्मक कार्यक्रम में, सबसे महत्वपूर्ण घटक 'नई तालीम' या नई शिक्षा है। उन्होंने अपनी शिक्षा की योजना को शांत सामाजिक उथल-पुथल की शुरुआत के रूप में माना और अनुमान लगाया कि यह शहर और गाँव के बीच एक मधुर संबंध स्थापित करेगा, जो वर्गों के बीच जहरीले रिश्ते को खत्म करने में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

गाँधी ने कहा था, "शिक्षा से मेरा मतलब है कि बच्चे और मनुष्य में, शरीर और मस्तिष्क और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ को समग्र रूप से बाहर निकालना।" शिक्षा की यह अवधारणा एक ही समय में दोनों लक्ष्यों को पूरा करती है। गाँधी की शिक्षा की अवधारणा के अनुप्रयोग को पहली बार 7 से 14 साल के बच्चों के लिए सुझाया गया था। इसे बुनियादी शिक्षा कहा जाता है। इसे बाद में सभी आयु वर्गों में लागू किया गया। गाँधी ने महसूस किया कि इसमें जीवन के प्रत्येक चरण, विश्वविद्यालय के चरण सहित सभी की शिक्षा शामिल होनी चाहिए।

बुनियादी शिक्षा एक नया दृष्टिकोण है। समस्या यह है कि ज्ञान को काम से अलग कर दिया गया है। वे एक दोषपूर्ण मनोविज्ञान द्वारा विचारों में अलग हो गए हैं। वे जीवन में एक दोषपूर्ण समाजशास्त्र द्वारा अलग हो गए हैं। उन्हें दोषपूर्ण वित्तीय मामलों द्वारा विशिष्ट बाजार को फिर से सौंप दिया गया है। शिक्षा के मूल सिद्धांतों में से एक यह है कि काम

और ज्ञान को कभी अलग नहीं किया जाना चाहिए। ज्ञान को श्रम से अलग करने से सामाजिक अन्याय में बढ़ोत्तरी होती है।

गाँधी ने एक ऐसे समाज को विकसित करने का लक्ष्य लिया जिसमें, "एक सामाजिक रूप से जागरूक आदमी सत्य और अहिंसा के प्रति समर्पित रहे।" उनकी शैक्षिक योजना राष्ट्रवादी थी, प्रकृति में आदर्शवादी और एक तरफ व्यावहारिक और दूसरी ओर इरादे में आध्यात्मिक थी। यह उनके सर्वोदय समाज के सपने को साकार करने के लिए एक आवश्यक साधन भी था, जिसमें लोगों के बीच ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज दूरी कम हो सके। गाँधी ने पारंपरिक सामाजिक संस्थाओं के विघटन और कुटीर उद्योग के विनाश के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए गरीबी, अशिक्षा, पिछड़ेपन, हताशा और हमारे जनसमूह के पतन के संदर्भ में बुनियादी शिक्षा की अपनी योजना तैयार की।

वे कहते हैं कि हमें वयस्क और बच्चे से सर्वश्रेष्ठ निकालना चाहिए। इस रैडिकल योजना को तैयार किया गया, हमारे गाँवों के प्रगतिशील क्षय की जाँच की गई, गाँव की अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित किया गया, एक उचित सामाजिक व्यवस्था की नींव रखी गई, जिसमें अमीर और गरीब और हर किसी के बीच कोई अप्राकृतिक विभाजन नहीं है। स्वीकार्य मानकों को प्राप्त करने का आश्वासन दिया है। मुफ्त शिक्षा द्वारा, गाँधी का मतलब राज्य या अन्य बाहरी एजेंसियों द्वारा पूरी तरह से समर्थित और सब्सिडी वाली शिक्षा नहीं थी। इसके बजाय, उन्होंने एक ऐसी रूपरेखा का सुझाव दिया, जिसमें सामान्य आबादी के काम की समझ से आत्म-बल की सबसे चरम अवधारणा है, जो कि निर्देश का एक साधन और मजदूरी का स्रोत है।

उनके पास अनुसंधान, उच्च शिक्षा और ज्ञान के संचय के बारे में बहुत विशिष्ट विचार थे। गाँधी की योजना में, उच्च शिक्षा ने प्रशिक्षण प्रदान करने और राष्ट्रीय आवश्यकताओं के लिए मानव शक्ति को उचित रूप से प्रेरित करने के लिए आवश्यक कार्य किया और ऐसी शिक्षा के उद्देश्यपूर्ण विस्तार की तत्काल आवश्यकता थी। उन्होंने घोषणा की, "कृ मेरी योजना के तहत, अधिक और बेहतर पुस्तकालय, अधिक और बेहतर शोध संस्थान होंगे। इसके तहत, हमारे पास रसायनज्ञों, इंजीनियरों और अन्य विशेषज्ञों की एक सेना होनी चाहिए जो राष्ट्र के वास्तविक सेवक होंगे और उन लोगों की विविध और बढ़ती आवश्यकताओं का जवाब देंगे जो अपने अधिकारों और चाहतों के प्रति सचेत हो रहे हैं।"

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) आज के संदर्भ में गाँधी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा योजना या मौलिक शिक्षा या नई तालीम किस तरह महत्वपूर्ण हैं? चर्चा करें।

....

....

....

....

....

....

13.7 सारांश

जनशक्ति को सही दिशा में चौनलाइज करने के लिए शिक्षा को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। विभिन्न परिषदों की रिपोर्टों में और आवश्यकता की पूर्ति के लिए और शिक्षा के महत्व को व्यावसायिक बनाने की वकालत की गई है, यानी रोजगारोन्मुखी और स्वरोजगार के लिए उत्पादक शिक्षा। बेरोजगार युवा साथियों और महिलाओं के निर्देश के बढ़ते कठिन मुद्दे के साथ, छात्रों के बीच संकट को समाप्त करने के लिए शिक्षा की गाँधीवादी अवधारणा की आत्मा पर शैक्षिक प्रणाली का पुनर्विचार 21 वीं सदी की आवश्यकता है।

नतीजतन, यह बताने के लिए बहुत समर्थित है कि बुनियादी शिक्षा के बुनियादी सिद्धांतों के प्रमुख मानक हमारे शैक्षिक सुधार के संबंध में अभी तक पर्याप्त और उत्पादक हैं। वे आधुनिक शिक्षा के प्रबंधन मानकों के रूप में उपयोग किए जाने के लिए उपयुक्त हैं। वास्तव में, इसे आधुनिक तर्ज पर बदला जाना चाहिए, फिर यह प्रारंभिक चरण में दिशानिर्देश की सबसे पेचीदा और उत्पादक प्रक्रियाओं के बीच एक स्टैण्डआउट के रूप में भर सकता है।

13.8 संदर्भ ग्रंथ

गाँधी, एम.के. (1928), *सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका* (ट्रांस.) वी.जी. देसाई, अहमदाबाद : नवजीवन प्रकाशन हाउस

सक्सेना, के.एस. (ऐड) (1972) *गाँधी सेंटेनरी पेपर्स,* वॉल्यूम-4, सोशल एण्ड ऐडूकेशनल फिलोसफी ऑफ गाँधी, भोपाल : काउंसिल ऑफ ओरियेंटल रिसर्च, 1972

गाँधी, एम.के. (1938), *हिंद स्वराज ऑफर द इण्डियन होम रूल,* अहमदाबाद : नवजीवन प्रकाशन हाउस

गाँधी, एम.के. (1959), *माय सोशलिज्म,* कम्पाइल्ड दन आर.के. प्रभु, अहमदाबाद : नवजीवन प्रकाशन हाउस

ग्रेग्ग, रिचर्ड बी. (1966), *द पावर ऑफ नॉनवायलेंस,* मायने : ग्रीनलीफ बुक्स

पारेख, सी. भीखू (1997), *गाँधी (पोस्ट मोस्टर्स सिरीज),* ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

13.9 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

1) अपने उत्तर में शिक्षा की संकीर्ण और व्यापक दोनों दृष्टिकोणों को शामिल करें जिसमें स्कूली शिक्षा के अलावा व्यक्तित्व विकास और नैतिक शिक्षा शामिल हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

1) यहाँ समाजशास्त्रीय, भावनात्मक, दार्शनिक और सांस्कृतिक आयाम पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

1) शिक्षा गारंटी योजना और वैकल्पिक और अभिनव शिक्षा के तहत विभिन्न योजनाओं की विस्तृत चर्चा उत्तर में शामिल होनी चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

1) उत्तर में गाँधी की नैतिक शिक्षा और व्यक्तित्व विकास पर जोर दिया जाना चाहिए।

इकाई 14 सदाचार और नैतिकता

संरचना

14.1 प्रस्तावना

लक्ष्य एवं उद्देश्य

14.2 अहिंसा

14.3 सच्चाई

14.4 चोरी नहीं करना

14.5 ब्रह्मचर्य

14.6 संपत्ति का त्याग

14.7 चरित्र

14.8 विश्व शांति

14.9 सारांश

14.10 अभ्यास प्रश्न

14.11 संदर्भ ग्रंथ

14.1 प्रस्तावना

आम तौर पर सदाचार को जीवन के मूल्यों को सही प्रकार से समझने की आवश्यकता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है और सदाचारी होना अपने जीवन में कुछ मूल्यों का पालन करने की इच्छा दर्शाता है : "दूसरों के जीवन को भी अपने जीवन की तरह महत्वपूर्ण समझना ही संतुष्टि की भावना को जन्म देता है"। महात्मा गाँधी के दर्शन का केंद्र सदाचार है। वह नैतिक और आध्यात्मिक स्थिति में जीवन को समग्र रूप से हर दिन सत्य की ओर बढ़ते हुए मानते थे। वह सत्य और अहिंसा के धर्म पर स्थापित आचरण के एकल मानक में विश्वास करते थे। उन्होंने नस्लीय भेदभाव, औपनिवेशिक शासन, आर्थिक और सामाजिक शोषण और नैतिक पतन के खिलाफ अहिंसक संघर्षों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। महात्मा गाँधी एक शिल्पी शिक्षाविद या तथाकथित दूरदर्शी नहीं थे। वह अपने आस-पास की दुनिया से गहरा संबंध रखते थे। उन्होंने कभी भी दूरदर्शी होने का दावा नहीं किया। गाँधी धीमी आवाज में बोलने वाले और एक झिझकने वाले सार्वजनिक वक्ता थे। फिर भी सभी वर्गों के लोग उनके प्रति आकर्षित थे और सहज ही उन्हें गहरी आध्यात्मिक और नैतिक धारणाओं के नेता के रूप में महसूस किया, जिसे उन्होंने सत्य की खोज के माध्यम से महसूस किया। गाँधी ने अकेले ही अहिंसा को हिंसा का सार्वभौमिक पर्याय और उनके नेतृत्व की मुख्य धारा बना दी। उनकी अहिंसा अन्याय और शोषण का मुकाबला करने का तरीका थी, न कि किसी सही लड़ाई से भागना। उन्होंने विनम्रता, करुणा, क्षमा और सहिष्णुता के गुणों को अहिंसा के पर्याय के रूप में जोड़ा।

गाँधी के अनुसार सेवा और त्याग की भावना एक सफल नेतृत्व की कुंजी थी। सेवा की भावना के लिए उन्होंने कहा कि हरेक को अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों पर जोर देना चाहिए न कि सिर्फ अधिकारों पर। उन्होंने इसे संकेंद्रित हलकों के उदाहरण के माध्यम से चित्रित किया : जो अपने आस-पास के लोगों की सेवा से शुरू होता है और जब तक यह

सुरुचि अग्रवाल, शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25

पूरे ब्रह्माण्ड तक नहीं फैल जाए, तब तक सेवा के चक्र का विस्तार होता रहता है। उनके लिए सेवा का अर्थ आत्म-त्याग में निहित था। उन्होंने कहा कि त्याग ही जीवन का नियम है। यह जीवन के हर मोड़ पर उपस्थित रहता है और उसे आगे की ओर चलाता है। हम सबको इस त्याग के लिए कोई न कोई कीमत चुकानी होती है। सेवा के प्रति प्रतिबद्धता, हालांकि विवेक (नैतिक अनिवार्यता), साहस (निडरता, बहादुरी, पहल) और चरित्र (अखंडता) की एक मजबूत भावना की मांग करती है। महात्मा गाँधी के लिए, 'आंतरिक आवाज' अंतरात्मा का पर्याय थी। उनका मानना था कि नेताओं को सामान्य लोगों की तुलना में अपने विवेक को विकसित करने और उसका पालन करने की आवश्यकता ज्यादा है क्योंकि वे दूसरों के लिए मार्ग निर्धारित करते हैं।

गाँधी के सत्याग्रह ने उच्चतम नैतिक-आध्यात्मिक स्तरों और सामान्य, जीने के लिए संघर्षरत लोगों को नायक बना दिया। उनकी शक्ति उन लोगों के माध्यम से उत्पन्न हुई, जिन्हें उन्होंने आत्म-सम्मान, उद्देश्य और नैतिक शक्ति की भावना दी। महात्मा गाँधी के अनुसार नैतिकता ईश्वर और धर्म की अवधारणा से अलग नहीं है। नैतिकता ही धर्म का मूल सार है। महात्मा गाँधी के लिए, आध्यात्मिकता मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य होना चाहिए और बाकी सभी को उस लक्ष्य के अधीन होना चाहिए।

गाँधी के दर्शन की प्रासंगिकता भारत की सीमाओं में ही बंधी नहीं रहती बल्कि बहुत आगे जाती है। अन्यायपूर्ण शासन के खिलाफ सशक्त आवाज पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है। उनका नाम ही अमानवीय और शोषणपूर्ण व्यवहार के खिलाफ विद्रोह का प्रतीक बन गया है। 'हिंद स्वराज' गाँधी की आधुनिक सभ्यता की नैतिकता की परीक्षा नैतिकता और सदाचार पर आधारित एक ऐसा ग्रंथ है, जो नवजात राष्ट्रों की आशा की किरण है। आधुनिक राजनीतिक माहौल में इस दार्शनिक विश्लेषण की तुलना सुकरात के विचार से की जा सकती है। गाँधी हमें यह समझने में मदद करते हैं कि कैसे नैतिकता दुनिया में धीमी लेकिन आवश्यक बदलाव ला सकती है।

सत्याग्रह के रास्ते से बुराई का विरोध करना गाँधीजी की आलोचनात्मक सोच का सबसे सार्वजनिक उदाहरण था। उनके अनुसार 'अहिंसा' सर्वोच्च आदर्श या बहादुरी थी। उन्होंने कहा कि अहिंसा का पालन केवल बहादुर ही कर सकते हैं, कायर नहीं। सही रास्ता चुनना अत्याचार और अन्याय के खिलाफ संघर्ष का सर्वोच्च रूप था। गाँधी के पास कोई प्लेटोनिक या मैकियावेलियन दर्शन नहीं था, लेकिन एक नैतिक और आध्यात्मिक जड़ थी जिसने मनुष्य के निम्नतम को भी उभारने में मदद की। वह व्यक्ति के नैतिक विकास में विश्वास करते थे। गाँधी के अनुसार लोकतंत्र कभी भी जबरदस्ती हासिल नहीं किया जा सकता, बल्कि यह व्यक्ति के अंदर उत्पन्न होता हुआ समाज में विकसित होता जाता है।

लक्ष्य और उद्देश्य

यह इकाई आपको समझने में सक्षम करेगी

- गाँधी की सदाचार और नैतिकता की अवधारणाएं।
- सत्य और अहिंसा का गाँधी का विचार।
- गाँधी की गैर-चोरी, गैर-स्वामित्व और ब्रह्मचर्य की अवधारणाएं।
- नैतिक और आध्यात्मिक चरित्र पर गाँधी के विचार।
- गाँधी की जीवन शिक्षा।

14.2 अहिंसा

महात्मा गाँधी के अनुसार अहिंसा का अर्थ है अपने आप को पूरी तरह से ऐसी कार्रवाई से दूर रखना जिससे दूसरों को शारीरिक या मानसिक रूप से चोट पहुंच सकती है। हिंसा एक ऐसा व्यवहार है जिसमें शारीरिक बल से चोट पहुँचाने, नुकसान पहुँचाने या जान से मारने का इरादा शामिल होता है। अहिंसा का अर्थ स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों को खुश रखना है। अहिंसा का मूल सिद्धांत है, कि जो आपके लिए अच्छा है वह पूरे ब्रह्मांड के लिए अच्छा है। गाँधी का मानना था कि प्रतिशोध की तुलना में अहिंसा बुराई के खिलाफ एक अधिक सक्रिय और अधिक वास्तविक लड़ाई है क्योंकि प्रतिशोध बुराई को बढ़ाता है। अहिंसा मनुष्य के प्रमुख नैतिक गुणों में से एक है। अहिंसा हिंसा से शक्तिशाली है क्योंकि यह मन की बहादुरी से जुड़ी होती है। अहिंसा बलवान का एक शक्तिशाली हथियार है। महात्मा गाँधी ने न केवल अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए, बल्कि मानव समाज के आचरण को शुद्ध करने के लिए अहिंसा का उपयोग किया। उन्होंने सामूहिक कार्रवाई में अहिंसा का प्रयोग किया और अन्याय से लड़ने के लिए साधन तैयार किए।

भेदभाव और झूठ से लड़ने के लिए अहिंसा सबसे प्रभावी साधन है। अहिंसा बाहरी ताकत नहीं है बल्कि यह आंतरिक शक्ति है। यह शाकाहार और सभी जीवों के लिए श्रद्धा को बढ़ावा देती है। अहिंसा दुनिया में हत्या, युद्ध, मृत्युदंड इत्यादि के खिलाफ है। यह मानव समाज में गर्भपात, दया हत्या, आत्महत्या और शिशु हत्या के भी खिलाफ है। यह शारीरिक और मनोवैज्ञानिक हिंसा, शोषण, अन्याय, असमानता और भेदभाव से मुक्ति दिलाती है। अहिंसा मानवता में प्रेम, सहयोग, क्षमा, सहायता और दया का विकास करती है। अहिंसा सत्य की खोज का मूल है। सत्य ईश्वर है और अहिंसा ईश्वर का प्रेम है। सत्य मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है और अहिंसा इस परम लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन है। अहिंसा के बिना सत्य की चाहत और खोज संभव नहीं है। अहिंसा और सत्य आपस में इतने घुले मिले हैं कि उन्हें एक दूसरे से अलग करना व्यावहारिक रूप से असंभव हो जाता है। वे एक ही सिक्के के दो पहलू की तरह हैं।

महात्मा गाँधी ने कहा कि अहिंसा की पहली शर्त यह है कि हम अपने दैनिक जीवन में सत्यता, विनम्रता, सहिष्णुता, प्रेम और दया का भाव रखें। कहा जाता है कि ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है, लेकिन अहिंसा के संदर्भ में यह एक अपरिवर्तनीय पंथ है। अपने आस-पास फैली हिंसा के बीच इसे ढूंढना होता है। अहिंसक व्यक्ति के सामने अहिंसा के प्रदर्शन में कोई बड़ाई नहीं है। वास्तव में, यह कहना मुश्किल हो गया है कि क्या यह अहिंसक है, लेकिन जब इसे हिंसा के खिलाफ प्रयोग किया जाता है, तब इन दोनों के बीच के अंतर का एहसास होता है। यह हम तब तक नहीं कर सकते जब तक कि हम जागृत, सतर्क और प्रयत्नशील न हों। अहिंसा की शक्ति आंतरिक बल की शक्ति है। गाँधी के अनुसार यह अहिंसा नहीं होती अगर हम केवल उन लोगों से प्यार करते हैं जो हमसे प्यार करते हैं। अहिंसा वह है जब हम उन लोगों से प्यार करते हैं जो हमसे नफरत करते हैं। अहिंसा को शक्तिशाली बनाने के लिए मन को शक्तिशाली बनाना आवश्यक है। मन के सहयोग के बिना शरीर की अहिंसा कमजोर या कायर की अहिंसा है, और इसलिए, वह शक्तिशाली नहीं होती।

14.3 सच्चाई

गाँधी ने कहा कि सत्य हमारे होने का नियम है। सत्य ही ईश्वर है। सत्य एक गुण है। सत्य वास्तव में अपने आप को जानना है, लेकिन मनुष्य अपनी अज्ञानता के कारण इसे समझ

नहीं पाता। गाँधी के अनुसार अज्ञानता स्वाभाविक नहीं होती। उन्होंने कहा कि किसी के चरित्र का नैतिक ह्रास या विकृति ही अज्ञानता का कारण बनती है। उन्होंने स्पष्ट रूप से उन छह घातक शत्रुओं का उल्लेख किया है जिनके कारण पूर्वाग्रह, द्वेष और दुर्भावना उत्पन्न होती है, जिसके कारण व्यक्ति सत्य को देखने या महसूस करने में असमर्थ होता है। ये घातक शत्रु हैं इच्छा, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान और ईर्ष्या। इसलिए, सत्य का अभ्यास करने के लिए, इन बुराइयों से खुद को बचाने के लिए लगातार प्रयास करना चाहिए, व्यक्ति को नैतिक पवित्रता और साहस का उपयोग करना चाहिए और इन दुश्मनों को अपने सत्य की खोज की राह का रोड़ा नहीं बनने देना चाहिए।

गाँधी इस बात से भी अवगत थे कि वर्तमान समय में दुनिया में झूठ अधिक लाभकारी प्रतीत होता है। झूठ बोलने से लोग सफल हो जाते हैं, लेकिन गाँधी ने असत्य पर सत्य की श्रेष्ठता में विश्वास किया। सत्य बोलने के संबंध में एक शर्त है जिसे गाँधी ने व्यावहारिक मूल्य के कारण स्वीकार किया था। यहां तक कि इसे स्वीकार करने में भी गाँधी ने प्राचीन भारतीय शिक्षण के प्रति वफादार रहने की कोशिश की। शर्त यह है कि सत्य को सुखद तरीके से बोला जाना चाहिए। यदि सत्य को अप्रिय और उग्र रूप में व्यक्त किया जाता है, तो यह सामाजिक रूप से हानिकारक हो सकता है क्योंकि यह क्रोध और झगड़े को जन्म दे सकता है। वास्तव में, प्राचीन भारतीय दर्शन में एक कहावत है जो कहता है, 'सत्य बोलो, और सुखद बोलो लेकिन अप्रिय सत्य मत बोलो'। गाँधी इस कहावत में व्यावहारिक रूप से निहित तत्व से प्रभावित थे। इसलिए, उन्होंने कहा कि सत्य का अभ्यास करना होगा, यह एक कला है जिसे कठोर और निरंतर अनुशासन और अभ्यास द्वारा विकसित किया जाना है।

14.4 चोरी नहीं करना

गाँधी ने समझाया कि चोरी नहीं करने का मतलब सिर्फ सामान की चोरी नहीं करने तक सीमित नहीं है। चोरी नहीं करने का मतलब विचार, शब्द और कार्रवाई से है, जिसका वह हकदार नहीं है। चोरी नहीं करने के दो अर्थ हैं लोकप्रिय रूप से इसका अर्थ है किसी व्यक्ति की संपत्ति को न छीनने का नियम जब तक कि वह उस व्यक्ति द्वारा नहीं दी जाती। इसका दूसरा, अधिक कठोर अर्थ उन चीजों को अपने पास नहीं रखना है जिनकी आपको जरूरत नहीं है। महात्मा गाँधी ने इन दोनों अर्थों में चोरी नहीं करने का उपयोग किया है। वास्तव में, इस गुण की प्रकृति की कल्पना करने में वे जैन धर्म से प्रभावित थे जो मानता है कि चोरी करना भी एक प्रकार की हिंसा है। संपत्ति वास्तव में, बाहरी जीवन है, क्योंकि शारीरिक अस्तित्व संपत्ति पर निर्भर करता है। इसलिए, उसके गुणों में से एक को लूटना उसके बाहरी जीवन की चोरी करना है। चोरी न करना एक गुण भी है क्योंकि चोरी करना प्यार के गुण के अनुकूल नहीं है। इसलिए, गाँधी ने सिफारिश की कि वास्तव में नैतिक व्यक्ति को चोरी नहीं करने जैसे गुण को साधने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा लेनी होगी।

14.5 ब्रह्मचर्य

महात्मा गाँधी ने कहा कि ब्रह्मचर्य का अर्थ विचार, वाणी और कर्म से सिर्फ अपने बारे में सोचने से दूर होना है। स्व-भोग का अर्थ है अपनी इच्छाओं को अत्यधिक रूप से भोगना। ब्रह्मचर्य शुद्धता तक सीमित है। ब्रह्मचर्य का अर्थ है यौन संबंधों से परहेज या प्रजनन अंगों पर शारीरिक नियंत्रण रखना। गाँधी ने ब्रह्मचर्य का उपयोग लोकप्रिय और पारंपरिक दोनों अर्थों में किया। उन्होंने यौन नियंत्रण के महत्व पर जोर दिया। ब्रह्मचर्य का अर्थ सभी इंद्रियों और मन पर संयम रखना है। इंद्रियां अक्सर मनुष्य को भ्रमित और गुमराह करते हैं।

अनैतिकता मूल रूप से इंद्रियों की मांगों को पूरा करने की इच्छा से पैदा होती है। इसलिए, व्यक्ति को अनुशासन का पालन करना चाहिए, जिससे इंद्रियों के कारण भटकने के बजाय, व्यक्ति इंद्रियों को नियंत्रण में रखने में सक्षम हो। वास्तव में, यहां तक कि यौन नियंत्रण तब तक संभव नहीं जब तक इंद्रियों को वश में न रखा जाए। उदाहरण के लिए, महात्मा गाँधी को लगता है कि हमारी भोजन की आदतों को बदलना चाहिए। तालू स्वादिष्ट भोजन के लिए जिम्मेदार है, जो यौन उत्तेजना पैदा करता है। इसलिए, गाँधी ने खाद्य पैटर्न को विकसित करने के लिए, विभिन्न प्रकार के भोजन के साथ प्रयोग किया, जो कि भोजन के स्वास्थ्य मूल्य को कम किए बिना, अनाकार और अवांछनीय इच्छा को उत्पन्न नहीं होने देता। ब्रह्मचर्य इसी प्रकार के अनुशासन का नाम है।

14.6 संपत्ति का त्याग

महात्मा गाँधी ने कहा कि संपत्ति का त्याग विचार, शब्द और कर्म से संपत्ति का त्याग है। संपत्ति का त्याग ही संतोष है। त्याग का अर्थ स्वीकार नहीं करना है। संपत्ति का अधिकार किसी दूसरे के साथ संपत्ति को साझा करने के आड़े आता है। गाँधी ने महसूस किया कि चीजों पर अपना अधिकार जताने की प्रवृत्ति ही सभी बुराइयों का कारण है। इसलिए, उनके अनुसार, जिसके पास जो कुछ भी है उसके साथ ही जीवन जीने की आदत डालनी चाहिए। गाँधी इस बात से अवगत थे कि इस गुण का पूर्ण रूप से अभ्यास करना संभव नहीं था, क्योंकि जीवन में संपूर्ण त्याग असंभव है यहां तक कि शरीर भी एक संपत्ति है - शरीर के संरक्षण के लिए आवश्यक चीजें भी संपत्ति हैं, और इसलिए, जब तक कोई जीवित है वह पूरी तरह से संपत्ति का त्याग नहीं कर सकता। फिर भी, इसका अपनी क्षमता के अनुसार अभ्यास करना चाहिए क्योंकि यह सामाजिक जीवन में दरार पैदा नहीं करता है और सार्वभौमिक प्रेम को पनपने के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है।

14.7 चरित्र

गाँधी का मानना था कि चरित्र सदाचार और नैतिकता की ताकत है। चरित्र अपने अंदर से उत्पन्न होता है। चरित्र ही सफलता की कुंजी है। चरित्रवान व्यक्ति खुद को किसी भी पद के योग्य बना देगा जिस पर उसे बिठाया गया है। महत्वपूर्ण समय में चरित्र ही काम आता है, दिमाग नहीं। चरित्र किसी भी बड़ाई से बेहतर होता है। चरित्र संदेह से परे, सत्य और आत्म-नियंत्रित होना चाहिए। अंत में चरित्र ही महत्वपूर्ण होता है न कि ज्ञान। माता-पिता अपने बच्चों को जो वास्तविक धन दे सकते हैं, वह उसका चरित्र और शिक्षा है। सभ्यता, संस्कृति और गरिमा का सबसे कठिन परीक्षण चरित्र है न कि पहने गए वस्त्र। सफलता स्वेच्छा से अतिवादी चरित्र की पीड़ा का परिणाम है। दुःख और पीड़ा चरित्र को विकसित करते हैं यदि वे स्वेच्छा से पैदा होते हैं, न कि यदि वे ऊपर से लगाए जाते हैं। स्वच्छ चरित्र और आत्म-शुद्धि वाले लोग आसानी से आत्मविश्वास को प्रेरित करेंगे और अपने आसपास के वातावरण को स्वचालित रूप से शुद्ध करेंगे।

आने वाले समय में लोग अपने काम, उद्योग, त्याग, ईमानदारी और चरित्र की शुद्धता से जाने जाएंगे न कि पंथ, वस्त्र या अपने भाषण के कारण। चरित्र की पवित्रता श्रम की गरिमा के रूप में हर किसी के कार्यों में दिखाई देती है और हमारे स्वयं के जीवन को अर्जित करने के लिए चरखे के कताई के प्रतीक के रूप में। जनता के ऊपर चरित्र का काफी प्रभाव पड़ता है। गाँधी ने कहा कि अगर कोई अपने चरित्र का निर्माण करके अपने विचारों और कार्यों में निपुणता प्राप्त नहीं करता, तो उसके लिए षेक्सपियर और वर्ड्सवर्थ के सभी अध्ययन व्यर्थ हो जाएंगे।

प्रतिज्ञा किसी के चरित्र में स्थिरता और दृढ़ता प्रदान करता है। भाषा अपने वक्ताओं के चरित्र और विकास का एक सटीक प्रतिबिंब होता है। एक विलेय चरित्र, विलेख की तुलना में विचार में अधिक असंगत है, और यही सच्चाई हिंसा के लिए भी है। साहित्यिक प्रशिक्षण अपने आप में किसी भी प्रकार की नैतिक ऊँचाई को नहीं जोड़ता है। चरित्र निर्माण शिक्षण पर आधारित नहीं होता। चरित्र को मोर्टार और पत्थर या किसी अन्य के द्वारा नहीं बल्कि इसका निर्माण खुद से करना होता है। प्रिंसिपल और प्रोफेसर किताबों के पन्नों से छात्रों के चरित्र का निर्माण नहीं कर सकते। किसी व्यक्ति का चरित्र उसके स्वयं के जीवन के अनुभवों से आता है, जैसे कि वह खुद के अंदर से बाहर आता है। गाँधी ने कहा कि अगर धन खो गया तो कुछ भी नहीं अगर स्वास्थ्य खो जाता है तो कुछ खो जाता है अगर चरित्र खो जाता है तो सब कुछ खो जाता है।

14.8 विश्व शांति

गाँधी की उपलब्धियां चमत्कार से कम नहीं थीं। उनका उद्देश्य न केवल उन लोगों के लिए शांति लाना था जिन्होंने अन्याय और दुःख का सामना किया बल्कि शांति और सद्भाव के साथ मानवता के लिए जीवन का एक नया तरीका पेश किया। उनका जीवन शक्ति पर शांति का संदेश था, आपसी मतभेदों को समाप्त करने के तरीके खोजने का, और अपने दुश्मन के लिए भी सम्मान और प्रेम के साथ रहने का। गाँधी के अनुसार सत्ता का बल प्रेम की शक्ति से कभी भी जीत नहीं पाया। दुनिया में सबसे बड़ी अशांति और उथल-पुथल के समय भी सबसे बड़ी ताकत सभी के लिए प्यार और सहिष्णुता ही होती है। जैसा कि हम जानते हैं, गाँधी हमेशा शांति में विश्वास रखने वाले थे। उन्होंने कहा कि युद्ध के कारण हमेशा सभी को दुःख और दर्द का ही सामना करना पड़ता है। इतिहास ने तानाशाहों के अनगिनत उदाहरण देखे हैं, जिनमें हिटलर, मुसोलिनी और स्टालिन आदि शामिल हैं जिन्होंने हमारी दुनिया को दुख और विनाश ही दिया। दुनिया में शांति तभी हासिल की जा सकती है जब हमें अहिंसा की शक्ति का एहसास हो, जैसा कि महात्मा गाँधी के जीवन से पता चलता है। गाँधी ने यह साबित कर दिया कि कोई भी बिना किसी को मारे, बिना किसी बच्चे को अनाथ बनाए, और बिना किसी को बेघर किए, मानव जाति के लिए स्वतंत्रता, न्याय और लोकतंत्र के महान लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

प्रत्येक मनुष्य के मूल में एक शांतिपूर्ण जीवन जीने की उनकी सहज इच्छा निहित होती है। गाँधी के अनुसार दुनिया में शांति लाने के लिए अपने स्वयं के बलिदान की आवश्यकता है, न कि विरोधियों की। गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका के डरबन में अपनी चलती हुई वकालत को लात मार दी और शक्तिहीन और निराश्रितों के दर्द को साझा करने के लिए साधारण जीवन जीने लगे। उन्होंने बिना शासन किए, सिर्फ परोपकार की शक्ति से लाखों लोगों के दिलों पर जीत हासिल की। हम भी अपने खुद के स्वार्थ को त्यागकर अपनी दुनिया में शांति ला सकते हैं। गाँधी ने सभी को सिखाया कि जीवन में एक व्यक्ति का सबसे बड़ा उद्देश्य स्वयं से ज्यादा दूसरों की भलाई करके लोगों के दिलों को जीतना होना चाहिए।

गाँधी ने कहा, ''आंख के बदले आंख की भावना पूरी दुनिया को ही अंधा बना देगी।'' इतिहास इस तथ्य की पुष्टि कर सकता है कि ज्यादातर मानवीय संघर्ष हमारे नेताओं द्वारा एक कट्टर/कट्टरपंथी दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप हुए हैं। गाँधी का सोचना था कि हमारा इतिहास बेहतर होता यदि हमारे नेता यह जान पाते कि विरोधियों के मुद्दों को समझने की इच्छा और कूटनीति और करुणा का उपयोग करके अधिकांश विवादों को आसानी से हल किया जा सकता था। उन्होंने यह भी कहा कि कोई भी व्यक्ति कहीं भी रहता हो, किसी भी धर्म को मानता हो या किसी भी संस्कृति का पालन करता हो, सभी के दिल में, सभी मनुष्य

हैं और सभी समान हैं। सभी की महत्वाकांक्षाएं और आकांक्षाएं समान हैं कि अपने परिवार का पालन पोषण अच्छे से किया जाए और जीवन को पूरी तरह से जीया जाए। सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक मतभेदों के कारण संघर्ष नहीं होना चाहिए। ऐसे संघर्ष दुनिया में दुःख और विनाश ला सकते हैं।

14.9 सारांश

गाँधी ने सफलतापूर्वक पूरी दुनिया जो युद्ध और विनाश के खतरे से जूझ रहा था, को यह बतलाया कि सत्य और अहिंसा का पालन अकेले व्यक्तिगत व्यवहार के लिए नहीं है, इसे वैश्विक मामलों में भी लागू किया जा सकता है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने गाँधी के निधन के समय उन्हें एक अमर श्रद्धांजलि दी थी, ''प्रकाश हमारे जीवन से दूर चला गया है।'' अब हमें यह देखने की कोशिश करनी होगी कि गाँधी ने जिन सात सामाजिक पापकर्म का वर्णन किया था, उसे दूर करने के लिए हम क्या कर सकते हैं, जो हैं (1) बिना सिद्धांत की राजनीति, (2) बिना मेहनत का धन, (3) बिना नैतिकता के व्यापार, (4) बिना चरित्र के शिक्षा, (5) बिना विवेक का सुख, (6) मानवता के बिना विज्ञान और (7) त्याग के बिना पूजा।

गाँधी की दुनिया एक आध्यात्मिक और नैतिक दुनिया थी जहां सनातन धर्म की स्थापना एक बाध्यकारी शक्ति थी। गाँधी ने सभी धर्मों को समान और बस एक ही गंतव्य के लिए अलग-अलग सड़कें माना। शांति और अहिंसा उनकी नीति के मूल सिद्धांत थे। उनके लिए श्रम की गरिमा बहुत महत्वपूर्ण थी। गाँधी का मानना था कि कोई भी काम बहुत छोटा नहीं होता जिसे अच्छे से नहीं किया जाना चाहिए। जबरदस्ती करना उन्हें कभी भी पसंद नहीं था, वह आध्यात्मिक रूपांतरण की चाहत रखते थे। गाँधी के अनुसार कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक प्रदर्शन करके किसी कार्रवाई की शुचिता का अंदाजा लगा सकता है। एक पारदर्शी कार्रवाई या निर्णय ही अंततः और न्यायपूर्ण और लाभकारी साबित होगा। गाँधी ने अधिकार और कर्तव्य को कभी अलग करके नहीं देखा। उनके लिए वे एक ही सिक्के के दो पहलू थे। उन कार्यों के प्रति कट्टर प्रतिरोध या असहयोग जो अपमानजनक और अमानवीय था, उनके सत्याग्रह की राह में पहला कदम था। जनता का उत्थान और लाभ ही सभी कार्यों का उद्देश्य होना चाहिए। विनम्र को सशक्त होना चाहिए। उनके अनुसार डर और कुछ नहीं बस विश्वास की कमी होती है, क्योंकि विश्वास बढ़ने से डर कम हो जाता है।

नैतिक ताकत से शारीरिक ताकत कभी नहीं जीत सकती। गाँधी ने कहा कि अगर भारत के लोग चाहते हैं कि उनका देश आजाद हो और उनके नियंत्रण में हो, तो इसे चलाने के लिए एक रचनात्मक कार्यक्रम की जरूरत है। स्वशासन को सुशासन की संज्ञा नहीं दी जा सकती। युद्ध और हिंसा पर उनके विचार स्पष्ट थे। उन्होंने इन कृत्यों को 'दुष्टता' की संज्ञा दी और कहा कि ये पश्चिमी सभ्यता की आध्यात्मिक कमजोरी से उपजी हैं। गाँधी का मानवता के प्रति प्रेम और भारत की ताकत में उनका विश्वास, अहिंसा और सत्याग्रह ने उनके दुश्मनों के दिल पर भी विजय प्राप्त की। उन्होंने मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे अन्य विश्व नेताओं को अपने जीवन की ऊंचाई हासिल करने के लिए प्रेरित किया।

भारतीय लोगों को, गाँधी ने एक राष्ट्र दिया। दुनिया को, उन्होंने सत्याग्रह दिया जो यकीनन इस तबाह सदी का सबसे क्रांतिकारी विचार था। उन्होंने दिखाया कि हिंसा के त्याग से राजनीतिक परिवर्तन प्रभावित हो सकता है अन्यायपूर्ण कानूनों को शांतिपूर्वक और सजा स्वीकार करने की तत्परता के साथ हराया जा सकता है यह कि, 'आत्म-बल' इतना सशस्त्र बल है कि यह किसी साम्राज्य का भी अंत कर सकता है। उन्होंने बाइबल और टॉल्स्टॉय और 'भगवद-गीता' के अध्ययन से यह सीखा और उन्होंने मार्टिन लूथर किंग

जूनियर, नेल्सन मंडेला और अनगिनत अन्य राजनीतिक प्रदर्शनकारियों को इसे सिखाया जो आने वाले वर्षों में उनके उदाहरण का अनुसरण करेंगे। कुछ अर्थों में, गाँधी की सबसे बड़ी उपलब्धि उनकी विरासत में थी उनके आदर्शों के लिए, और उन्होंने उन्हें जीने में जो उदाहरण दिया, उससे प्रेरणा मिली और प्रेरणा मिलती रही, सभी राष्ट्रों के लोग उत्पीड़न से मुक्ति के लिए शांतिपूर्ण संघर्ष करते रहे।

14.10 अभ्यास प्रश्न

1) गाँधी की सदाचार और नैतिकता की अवधारणाएं क्या हैं?
2) गाँधी के सत्य और अहिंसा के विचार का उल्लेख करें।
3) गाँधी के चोरी नहीं करना, संपत्ति का त्याग और ब्रह्मचर्य की अवधारणा का वर्णन करें।
4) नैतिक और आध्यात्मिक चरित्र पर गाँधी के क्या विचार थे?
5) गाँधी के जीवन से क्या शिक्षा मिलती है?

14.11 संदर्भ ग्रंथ

आनन्द, वाय.पी., ''महात्मा गाँधीज़ लीडरशिप-मोरल एण्ड स्पिरिचुअल फाउण्डेशन्स'', *महात्मा गाँधीज राईटिंग्स एण्ड फिलसफीस,* जुलाई-दिसम्बर, 2007 http://www.mkgandhi.org/articles/sept081.htm.

बबौता, लीओ, ''महात्मा गाँधीज़ 5 टीचिंग्स टू ब्रिंग अबाउट वर्ल्ड पीस'', *द गुड मैन प्रोजेक्ट,* अप्रैल 7, 2016 | https://goodmenproject.com/featured-content/mahatma-gandhis-5-teachings-to-bring-about-world-peace-admc/.

http://www.mkgandhi.org/articles/sept081.htm.

बसंत कुमार, लाल, *कंटम्पररी इण्डियन फिलोसफी,* देहली : मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 2005

चन्दर, जग प्रवेश, *टीचिंग ऑफ महात्मा गाँधी,* लाहौर : द इण्डियन प्रिंटिंग वर्क्स, 1945

'कंक्लूशन : गाँधीयन ऐथिक्स', *महात्मा गाँधीज राईटिंग्स एण्ड फिलसफीस,* http://www.mkgandhi.org/conflict_reso/chap09.htm.

गाँधी, महात्मा, *द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी,* अहमदाबाद : नवजीवन पब्लिशर्स, 1980

गाँधी, महात्मा, *द स्टोरी ऑफ माय एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ,* अहमदाबाद : नवजीवन पब्लिशर्स, 1990

गाँधी, महात्मा, *बेसिक एजुकेशन* अहमदाबाद : नवजीवन पब्लिशर्स, 1985

गाँधी, महात्मा, *'ट्रुथ', महात्मा गाँधीज राईटिंग्स एण्ड फिलसफीस* http://www.mkgandhi.org/truth/article3.htm.

'गाँधीज फिलसफी ऑफ नॉनवाइलेंस', *महात्मा गाँधीज राईटिंग्स एण्ड फिलसफीस* http://www.mkgandhi.org/africaneedsgandhi/gandhi's_philosophy_of_ nonviolence.htm.

जहाँबेग्लू, रामीन, 'गाँधी फॉर अवर ट्रबल्ड टाइम्स', *द हिन्दु,* जनवरी 30, 2017 http://www.thehindu.com/opinion/lead/Gandhi-for-our-troubled-times/article17113240.ece.

सुमार, रवि, 'द रिलिवेंस ऑफ गाँधी फॉर ऑल टाइम्स', *गाँधी सेवाग्राम आश्रम* http://www.gandhiashramsevagram.org/essay-on-gandhi/index.php.

'नॉन-स्टीलिंग', *महात्मा गाँधीज राईटिंग्स एण्ड फिलोसफी*, एन.डी.http://www.mkgandhi.org/yeravda/chap05.htm.

शर्मा, सी.डी., *क्रिटिकल सर्वे ऑफ इण्डियन फिलोसफी,* देहली : मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 1987

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

संदर्भग्रंथ सूची

ऐकरमैन, पीटर, एण्ड जैस डुवाल, *ए फोर्स मोर पॉवरफुल : ए सेंचुरी ऑफ नॉनवाइलेंट कंफ्लिक्ट,* न्यू यॉर्क, एस.टी. मार्टिन'स प्रेस 2000

ऐकरमैन, पीटर, एण्ड क्रिस्टोफर क्रुएल्गार, *स्ट्रैटेजिक नॉनवायलेंट कंफ्लिक्ट : द डायनामिक ऑफ पीपुल पावर इन द ट्वन्टीथ सेंचुरी,* वेस्टपोर्टः प्रेजर 1994

ऐडम्क, जैड, *गाँधी : नेक्ड एम्बिशन,* लंदनः क्यूरसस, 2010

अग्रवाल, श्रीमान नारायण, 'गाँधी एण्ड डिसेंट्रलाइजेशन ऑफ पॉलिटिकल पावर', इन क्षितिज रॉय (एड), *गाँधी मिमोरियल पीस नम्बर,* शांतिनिकेतन : विश्व भारती क्वार्टर्ली, 1949, पृ.177-83

अग्रवाल, श्रीमान नारायण, *गाँधियन कॉस्टीच्यूशन फॉर फ्री इण्डिया, इलाहाबाद, किताबिस्तान, 1976*

अलिन्सकन, सौल, *रूल्स फॉर रेडिकल्स : ए प्राइमर फॉर रियलिस्टिक रेडिकल्स, न्यू यॉर्क, विन्टेज, 1972*

अन्सब्टो, जॉन, जे., *मार्टिन लूथर किंग, जूनियर : द मेकिंग ऑफ माइण्ड,* मैरीनौल, न्यू यॉर्क : ओर्बिस, 1883

ऑस्टिन, ग्रानविले, *द इण्डियन कंस्टीच्यूशन : कॉर्नरस्टोन ऑफ ए नेशन,* ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ट यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966

बालाशुब्रमन्यन, के. (कॉम्प), *डायरेक्टरी ऑफ गाँधीयन कंस्ट्रक्शन वर्कर्स,* न्यू डेल्ही, गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1996

बाल्डविन, लेविस वी., *दीयर इज ए बाल्म इन जीलीड : द कल्चरल रूट्स और मार्टिन लूथर किंग, जूनियर,* मिन्नीआपोलिस : फोर्चून प्रेस, 1991

बार्र, एफ. मैरी, *बापू : कन्वरजेशन्स एण्ड कोरसपोण्डेन्स विद महात्मा गाँधी* (सेकण्ड ऐडिशन), बॉम्बे : इंटरनेशनल बुक हाउस, एन.डी.

बरूहा, उपेन्द्र कुमार, *पोर्ट्रेट ऑफ ए गाँधियन : बायोग्राफी ऑफ डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर,* गुहाटी, द ऑथर, 1985

बेडौ, हुगो आडम, (एड.), *सिविल डिसओबिएंस : थियोरी एण्ड प्रैक्टिस,* इण्डियानापोलिस, पीगेसुस, 1969

भार्गवा, राजीव, 'इंट्रोडक्शन : आउटलाइन्ड ए पॉलिटिकल थियोरी ऑफ द इण्डियन कंस्टीच्यूशन', इन भार्गवा (एड), *पॉलिटिक्स एण्ड ऐथिक्स ऑफ द इण्डियन कंस्टीच्यूशन,* न्यू डेल्ही : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008, पृ.1-40

भार्गवा, राजीव, (एड), *पॉलिटिक्स एण्ड ऐथिक्स ऑफ द इण्डियन कंस्टीच्यूशन,* न्यू डेल्ही : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008,

भट्टाचार्य, बुद्धदेवा, *द इवोल्यूशन ऑफ द पॉलिटिकल फिलोसफी ऑफ गाँधी,* कलकत्ता : कलकत्ता बुक हाउस, 1969

भावे, विनोबा, *डेमोक्रेटिक वैल्यूज,* वारानसी, सर्व सेवा संघ, 1962

बिरला, जी.डी., *इन द शैडो ऑफ द महात्मा*, बॉम्बे : ओरिएण्ट लॉन्गमैन्स, 1953

बिरला, घनश्याम दास, बापू : *ए यूनिक एसोसिएशन*, वॉल्यूम 14, बॉम्बे, भारतीय विद्या भवन, 1977

बिशप, पीटर डी., *ए टेक्नीक रोविंग : नॉन-वायलेंस इन इण्डियन एण्ड क्रिश्चियन ट्रैडिशन्स*, लंदन : एसएमसी प्रेस, 1981

बॉन्ड, डगलस जी., 'नेचर एण्ड मीनिंग ऑफ नॉनवायलेंट डायरेक्ट एक्शन : एन एक्सप्लोरेट्र स्टडी', *जर्नल ऑफ पीस रिसर्च*, 1988, वॉल्यूम 25, नं.1, प०81-89

बोस, निर्मल कुमार, *माय डेज विद गाँधी*, न्यू डेल्ही, ओरियण्ट लॉन्गमैन, 1974

बोसेरूप, एण्डर्स, एण्ड एण्ड्रयू मैक, *वार विदाउट वीपन्स : नॉन-वॉइलेंस इन नेशनल डिफेंस*, न्यू यॉर्क : शॉकेन, 1975

ब्राउन, जुडिथ एम., *गाँधी : प्रिजनर ऑफ होप*, न्यू हेवन येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989

ब्रुयन, सेवेरिन टी., एण्ड पौला एम. रामायन, *नौनवायलेंट एक्शन एण्ड सोशियल चेंज*, न्यू यॉर्क, इर्विंग्टन, 1981

बुबर मार्टिन, एण्ड जुदाह मैग्नेज, *टू लेटर्स टू गाँधी*, जेरूसेलम : रियूबेन मास, 1928

बुर्रोस, रॉबर्ट जे., *द स्ट्रेटजी ऑफ नॉनवाइलेंट डिफेंस : ए गाँधियन अप्रोच*, न्यू यॉर्क, स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू यॉर्क प्रेस, 1996

कार्सन, क्लेनबॉर्न (एड.), *द ऑटोबायोग्राफी ऑफ मार्टिन लूथर किंग, जूनियर*, लंदन : लिटल, ब्राउन एण्ड कंपनी, 1999

चटर्जी, दिलीप कुमार, *गाँधी एण्ड कंस्टीच्यूशन मेकिंग इन इण्डिया*, न्यू देहली, एशोसिएटेड, 1984

चटर्जी, मारर्गेट., *गाँधी एण्ड हिज जेविश फ्रेंड्ज*, लन्दन, मैकमिलन, 1992

चेनोवेथ, इरिका एण्ड मारिया स्टीफन, *व्हाय सिविल रजिस्टेंस वर्क्स : द स्ट्रेटेजिक लोजिक ऑफ नॉन-वायलेंट कन्फ्लिक्ट*, न्यू यॉर्क : कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011

चर्च, रॉड्रिक, 'विनोबा एण्ड द ओरिजिन ऑफ भूदान', *गाँधी मार्ग*, 1983, वॉल्यूम-5, नम्बरर्स-8/9, पृ.469-84

चर्चिल, ऐलन, *द इम्प्रोपर बोहेमियन्स : ए रि-क्रिएशन ऑफ ग्रीनविच विलेज इन इट्स हेडे*, लंदन : कैसेल, 1959

क्लेमेंट्स, पॉल, *लेंस इनटू द गाँधियन मूवमेंट : फाइव विलेज डिवलपमेंट ऑर्गेनाजेशन इन नॉर्थइस्ट इण्डिया*, बॉम्बे : प्रेम भाई, 1983

कूक, निला क्राम, *माय रोड टू इण्डिया*, न्यू यॉर्क : ली फुरमैन, 1939

दलाल, सी. बी., *गाँधी : 1915-1948 : ए डिटेल्ड क्रोनोलोजी*, न्यू डेल्ही : गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1971

दासगुप्ता, अजित के., *गाँधी इकोनॉमिक थौट*, लंदन : रूटलेज, 1996

देसाई महादेव, *डे-टू-डे विद गाँधी (सेक्रेटरीज डायरी),* राजघाट, वारानसी : सर्व सेवा संघ, 1973, वॉल्यूम-8

देसाई महादेव, *महादेवभाई नी डायरी,* वॉल्यूम-3, अहमदाबाद : गाँधी नरक संग्रहालय, 1993

देसाई महादेव, *द गोस्पेल ऑफ सेल्फिश ऑर द गीता एकोर्डिंग टू गाँधी,* अहमदाबाद : नवजीवन, 1946

देसाई नारायन, *माय लाइफ इस माय मैसेज, वॉल्यूम 1, साधना (1869-1915),* न्यू डेल्ही : ओरियण्ट, ब्लैकस्वान, 2009

देशपाण्डे, गोविन्दराव, 'ट्रस्टीशिप : द इक्सपेरिमेंट्स इन द यूनाइटेड किंगडम' इन सेठी (एड.) *ट्रस्टीशिप : द गाँधियन अल्टरनेटिव,* न्यू डेल्ही : गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1986, पृ. 225.35

दिवाऐन चन्द्रन, डी.एस., *द मेकिंग ऑफ द महात्मा,* न्यू डेल्ही : ओरियण्ट लॉन्गमैन, 1969

देवजी, फेजल, *द इम्पोसिबल इण्डियन : गाँधी एण्ड द टेम्पटेशन ऑफ वायलेंस,* लंदन, हर्स्ट एण्ड कंपनी, 2013

ऐबर्ट, थियोडोर, 'फाइनल विक्टरी' इन टी.के. महादेवन ऐडम रॉबर्ट एण्ड जीनी शार्प (एड.), *सिविलियन डिफेंस : ऐन इन्ट्रोडक्शन,* न्यू डेल्ही, गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1967, पृ. 195-96

ऐरिक्सन, ऐरिक एच., *गाँधीज ट्रूथ : ऑन द ओरिजिन ऑफ मिलिटेंट नॉनवायलेंस,* न्यू यॉर्क : डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन, 1969

फेंडरमैन, जोएल एस., 'द रोल ऑफ वैल्यूज इन नॉनवायलेंस' पेपर प्रेजेन्टेड टू द पीस स्टडीज एशोसिएशन', *सेवन्थ ऐनुअल कंफ्रेंस,* टफ्ट्स यूनिवर्सिटी 9-12 मार्च 1995

फिश्चर, लूइस, *ए वीक विद गाँधी,* लंदन, ऐलन एण्ड अनविन, 1943

फिशर डेविड जेम्स, *रोमन रोलेण्ड एण्ड द पोलिटिक्स ऑह इंटेलेक्चूअल इंगेजमेंट,* बर्कली : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1988

फिशर डेविड जेम्स, 'रोमन रोलेण्ड एण्ड द पोपुलराइजेशन ऑफ गाँधी, *गाँधी मार्ग,* 1974, वॉल्यूम 18, नं.3, पृ.145-80

गल्तुंग, जॉन, 'गाँधी एण्ड कॉन्फ्लीक्टोलोजी', अनपब्लिश्ड एपर, 1971, इन जॉन गल्तुंग, *पेपर्स : ए कलेक्शन ऑफ वर्क्स प्रिवियसली अवेलेबल ओनली इन मैन्युस्क्रिप्ट ऑर वैरी लिमिटेड सरकुलेशन मिमोग्राफ्ड ऑर फोटोकॉपीज ऐडिशन्स,* वॉल्यूम 5, 'पेपर्स इन इंग्लिश 1968-1972', इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीच्यूट, ओस्लो, 1980, पृ.107-58

गल्तुंग, जॉन, *द वे इज द गोल : गाँधी टूडे,* अहमदाबाद : गुजरात विद्यापीठ पीस रिसर्च सेंटर, 1992

गाँधी गोपालकष्णा (एड.), *गाँधी इज गोन, हू विल गाइड, अस नॉव?* रानीखेत परमानेंट ब्लैक, 2007

गाँधी गोपालकष्णा (एड.), *माय डीयर बापू : लेटर्स फ्रॉम सी., राजगोपालाचारी टू मोहनदास करमचन्द गाँधी, देवदास गाँधी एण्ड गोपालकष्णा गाँधी,* न्यू डेल्यू, विकिंग, 2012

गाँधी, एम.एस., *आश्रम ऑब्र्जवेशन इन एक्शन,* अहमदाबाद, नवजीवन, 1955

गाँधी, एम.एस., *कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी,* वॉल्यूम्स 1-100, न्यू डेल्ही, पब्लिकेशन्स डिविजन, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, 1958-1991; एण्ड रिवाज्ड सीडी-आरओएम वर्जन, न्यू डेल्ही : पब्लिकेशन्स डिविजन, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, 1999

गाँधी, एम.एस., *कंकेस्ट ऑफ सेल्फ* (आर. के. प्रभु एण्ड यू.आर. राव, कॉम्प्स), बॉम्बे : थाकर एण्ड कंपनी, 1943

गाँधी, एम.एस., *डिस्कोर्स ऑन द गीता,* अहमदाबाद, नवजीवन, 1960

गाँधी, एम.एस., द लॉ ऑफ कॉन्टीनेंस (आनन्द टी. हिंगोरानी, एड.), बॉम्बे : भारतीय विद्या भवन, 1964, गाँधी पेपर्स साबरमती, निधि (ट्रस्ट), साबरमती आश्रम प्रिजरवेशन ट्रस्ट, अहमदाबाद।

गाँधी, एम.के., *ऐन ऑटोबायोग्राफी ऑर द स्टोरी ऑफ माय इक्सपेरिमेंट विद ट्रुथ,* अहमदाबाद, नवजीवन, 1940

गाँधी, एम.के., *कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम : इट्स मीनिंग एण्ड प्लेस,* अहमदाबाद, नवजीवन, 1941

गाँधी, एम.के., *फ्रॉम यर्वदा मंदिर, अहमदाबाद,* नवजीवन, 1932

गाँधी, एम.के., *हिन्द स्वराज ऑर इण्डियन होम रूल, अहमदाबाद,* नवजीवन, 1938

गाँधी, एम.के., रस्किन : अन्टू दिस लास्ट पैराफ्रेस, *अहमदाबाद,* नवजीवन, 1951

गाँधी, एम.के., *सर्वोदय (द वेल्फेयर ऑफ ऑल), अहमदाबाद,* नवजीवन, 1954

गाँधी, एम.के., *सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका,* मद्रास : एस. गणेशन, 1928

गाँधी, एम.एस., *सेल्फ रेस्ट्रेंट वर्सेस सेल्फ इण्डलजेंस, अहमदाबाद,* नवजीवन, 1947

गाँधी, राजमोहन, *मोहनदास : ए ट्रू स्टोरी ऑफ ए मैन, हिज पीपुल एण्ड ऐन ऐम्पायर,* न्यू डेल्ही, विकिंग, 1005

गांधियनज, *विजिल,* 1994, वॉल्यूम-11, नं. 22/23, पृ.3-13

गंगाधर, डी. ए., *महात्मा गाँधीज फिलोसफी ऑफ ब्रह्मचार्य,* बैंगलौर, आईएसपीसीके., 1984

गैरौ, डेविड जे., *बीयरिंग द क्रॉस : मार्टिन लूथर किंग जूनियर, एण्ड द साउथर्न क्रिस्टियन लीडरशिप कॉन्फ्रेंस,* न्यू यॉर्क : विलियम मौरो, 1986

गौडा, एच. एच. अन्नियाह, 'नॉन-वायलेंट रजिस्टेंस इन थोरेइयू एण्ड गाँधी', इन सी.डी. नरसिम्हा (एड.), *गाँधी एण्ड द वेस्ट,* मैसूर : यूनिवर्सिटी ऑफ मैसूर प्रैस, 1969, पृ.101-27

ग्रीन मार्टिन, *गांधी: वॉइस ऑफ ए न्यू ऐज रिवॉल्यूशन, न्यू यॉर्क : कॉन्टीनम, 1993*

ग्रीनलेस, डंकन, *गाँधी आश्रम,* पहलघाट, केरला : स्कोलर प्रेस, 1934

ग्रेग्ग, रिचर्ड बी., *द पावर ऑफ नॉनवाइलेंस,* फिलाडेल्फिया : लिप्पिनकोट्ट, 1934

गुप्ता, एस.पी.स., *अपोस्ट्ल जॉन एण्ड गाँधी : द मिशन ऑफ जॉन हेन्स, होल्म्स फॉर महात्मा गाँधी इन द यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका : ए मोन्टेज, अहमदाबाद,* नवजीवन, 1988

हनीगन, जेम्स पी., *मार्टिन लूथर किंग, जूनियर एण्ड द फाउण्डेशन ऑफ नॉनवाइलेंस,* लैनहम, यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका प्रेस, 1984

हार्डिन, गैरेट, 'द ट्रैजिडी ऑफ द कॉमन्स', *साइंसख* 1968 वॉल्यूम-162, नं.3859, पृ.1243-48

हरे, ए. पॉल, एण्ड हर्बर्ट एच. ब्लूम्बर्ग (एडज), *नॉनवाइलेंट डायरेक्ट एक्शन : अमेरिकन केसेज : सोशल-साइकोलोजिकल ऐनालाइसेस,* वाशिंगटन, डी.सी., कॉर्पस, 1968

हैरिस, ईश्वर सी., 'सर्वोदय इन क्राइसिस : द गांधियन मूवमेंट इन इण्डिया टूडे', *एशियन सर्वे,* 1987, वॉल्यूम 27, नं.9, पृ.1036-52

हे, स्टीफन एन., 'जैन इन्फ्ल्यूएंस ऑन गाँधीज अर्ली थौट', इन सिबनारायन रे (एड), *गाँधी, इण्डिया, एण्ड द वर्ल्ड,* मेलबोर्न : द हार्थोर्न प्रैस, 1970, पृ.29-38

हेन्ड्रिक, जॉर्ज, 'गाँधी एण्ड डॉ. मार्टिन लूथर किंग', *गाँधी मार्ग,* 1959, वॉल्यूम-3, नं.1, पृ. 18-22

हेन्ड्रिक, जॉर्ज, 'इंफ्ल्यूएंस ऑफ थोरेयू एण्ड इमर्सन ऑन गाँधीज सत्याग्रह', *गाँधी मार्ग,* 1959, वॉल्यूम-3, नं.3, पृ.165-78

हर्मन, ए. एल., 'सत्याग्रह : ए न्यू इण्डियन वर्ड फोर सम ओल्ड वेज ऑफ वेस्टर्न थिंकिंग', *फिलोसफी ईस्ट एण्ड वेस्ट,* 1969, वॉल्यूम 19, नं.2, पृ.123-42

हिंगोरानी, आनन्द टी., एण्ड ए. गंगा, *द इंसाइक्लोपीडिया ऑफ गांधियन थौट्स,* न्यू डेल्ही : एआईसीसीआई (आई) 1985

हिटलर, ऐडोल्फ, *माय स्ट्रगल,* लंदन : हर्स्ट एण्ड ब्लैकैट्ट, 1933

हिटलर, ऐडोल्फ, पॉलिटक डेर वोचे, (पॉलिटिक्स ऑफ द वीक) *इलस्ट्रीएटर बिओचर,* 24 मई, 1930

होडा, सुरूर, 'शुमाचार ऑफन गाँधी', इन मनमोहन चौधरी एण्ड रामजी सिंह (एडज), *महात्मा गाँधी : 125 इयर्स,* वारानसी : सर्व सेवा संघ/गांधियन इंस्टीच्यूट ऑफ स्टडीज, 1995, पृ.95-105

हॉर्सबर्ग, एच.जे.एन., 'नॉनवायलेंस एण्ड इम्पेशिएंश', *गाँधी मार्ग,* 1968, वॉल्यूम 12, नं.4, पृ. 355-61

हन्ट, जेम्स डी., *गाँधी एण्ड द नॉनकन्फॉरमिस्ट्स : इन्काउन्टर्स इन साउथ अफ्रीका,* न्यू डेल्ही : प्रोमिला, 1986

हन्ट, जेम्स डी., *गाँधी इन लंदन,* न्यू डेल्ही : प्रोमिला, 1978

हन्ट, जेम्स डी., 'सुफ्रागेट्स एण्ड सत्याग्रह' *इण्डो-ब्रिटिश रिव्यू,* 1981, वॉल्यूम-9, नं.1 पृ.65-76

हन्ट, जेम्स डी., 'द कैलेनबेच पेपर्स एण्ड टॉलस्टाय फार्म' अनपब्लिश्ड वर्किंग पेपर प्रेजेन्टेड टू द एशोसएशन फॉर एशियन स्टडीज मीटिंग इन वाशिंगटन, डी.सी., 6-9 अप्रैल, 1995

हन्ट, जेम्स डी., 'थोरिएप एण्ड गाँधी : ए रि-इवोल्यूशन ऑफ द लिगेसी' *गाँधी मार्ग,* 1970, वॉल्यूम 14, नं.4 पृ.325-32

हक्सले, स्टीवन, डंकन, *कंस्टीच्यूशनलिस्ट इंसर्जेंसी इन 7 फिनलैण्ड : फिन्निश पैस्सिव रजिस्टेंस अंगेस्ट रसिफिकेनन ऐज ए केस ऑफ नॉन-मिलिट्री स्ट्रगल इन द यूरोपियन रजिस्टेंस ट्रैडिशन,* हेल्सिंकी : एस.एच.एस. 1990

अय्यर, राघवन., 'गांधियन ट्रस्टिशिप इन थियोरी एण्ड प्रैक्टिस', इन सेठी (एड.), *ट्रस्टीशिप : द गांधियन अल्टरनेटिव,* न्यू डेल्ही : गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1986, पृ.1-16

जॉन्स, लैने, 'पर्सेप्शन ऑफ ''पीस वोमेन' ऐट ग्रीनहैम कॉमन 1981-85 : ए पार्टिसिपेंट्स व्यू', इन शैरोन मैकडोनल्ड, पैल होल्डन एण्ड शिरली आर्डनर (एडज) *इमेजेज ऑफ वोमेन इन पीस एण्ड वार : क्रॉस-कल्चरल एण्ड हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स,* मैकमिलन : बेसिनस्टोक, 1987, पृ.179-204

जुएर्गेन्समेयर, मार्क, *गाँधीज वे : ए हैण्डबुक ऑफ कंफ्लिक्ट रिजोल्यूशन,* न्यू डेल्ही, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2003

काह्न ऐलेस, *गाँधी एण्ड द माइथ ऑफ नॉन-वायलेंट एक्शन,* सिडनी : सोशियलिस्ट वर्कर पॉकेट पैम्फलेट, 1996

ककर, सुधीर, *इन्टिमेट रिलेशन्श : इक्सप्लोरिंग इण्डियन सेक्सुअलिटी,* न्यू डेल्ही : पेंगुइन, 1989

कपूर, सुदर्शन, *रेजिंग अप ए प्रोफेट : द अफ्रीकन-अमेरिकन इनकाउंटर विद गाँधी, बचस्टन : बेकन प्रेस, 1992*

कार्ल, डेविड जे., 'डिफेंडिंग गाँधीजी'ज लिगेसी', *द वर्ल्ड अफेयर्स ब्लॉग नेटवर्क,* 6 अप्रैल, 2011

कताकम, अनुपमा, 'ज़ीरो टौलरेंस', *फ्रंटलाइन,* वॉल्यूम 28, नं.9, 23 अप्रैल-6 मई, 2011

किंग, जूनियर, मार्टिन लूथर, *ए टेस्टामेंट ऑफ होप : द इशेशियल राईटिंग्स और मार्टिन लूथर,* किंग, जूनियर (जेम्स मेल्विन वाशिंग्टन, एड.), सैन फ्रांसिस्को : हार्पर कॉलिन्स, 1986

किंग, जूनियर, मार्टिन लूथर, 'शोडाउन फॉर नॉनवाइलेंस', लुक, 16 अप्रैल 1968, पृ.23-25; रिप्रोड्यूस इन किंग, *ए टेस्टामेंट ऑफ होप,* पृ.34-72

किंग, जूनियर, मार्टिन लूथर, 'द पावर ऑफ नॉनवाइलेंस' *इण्टरकोलेजियन,* मई 1958, पृ.8

कुमार, गिरजा, *ब्रह्मचार्या, गाँधी एण्ड हिज वोमेन एशोसिएट,* न्यू डेल्ही, विटास्टा, 2006

कुमारप्पा, भारतन, 'ऐडिटर्स नोट', इन गाँधी, सर्वोदया (*द वेल्फेयर ऑफ आल)* नवजीवन : अहमदाबाद, 1954, पृ. iii-ix

लैके, जॉर्ज, *पावरफुल पीसमेकिंग : ए स्ट्रेटजी फॉर ए लिविंग रिवॉल्यूशन,* फिलाडेल्फिया : न्यू सोसाइटी पब्लिशर्स, 1987

लाल, विनय, 'नेक्डनेस, नॉन-वायलेंस, एण्ड द निगेशन ऑफ निगेशन : गाँधीज एक्सपेरिमेंट्स इन ब्रह्मचार्या एण्ड सेलिबेट सेक्सुअलिटी' *साउथ एशिया,* 1999, वॉल्यूम 22, नं.1, पृ.63-94

लेलीवेल्ड, जोसेफ, *ग्रेट सोल : महात्मा गाँधी एण्ड हिज स्ट्रगल विद इण्डिया,* न्यू यॉर्क : अल्फ्रेड ए. क्नॉप्फ, 2011

लिड्ज़, वी., 'ए नोट ऑन नॉनवाइलेंस इज टू', *सोशियोलोजिकल इंक्वायरी,* विंटर 1968, वॉल्यूम 36, नं.1, पृ.31-36

मलहोत्रा, एस.एल., 'ए स्टडी ऑफ गाँधीज बायोग्राफीज-जोसेफ जे. डोके एण्ड रोमेन रोलैण्ड', *गाँधी मार्ग,* 1985, वॉल्यूम 6, नं.12, पृ.845-61

मार्टिन, ब्रियान, एण्ड वेण्डी वर्नी, *नॉनवाइलेंस स्पीक्स : कम्यूनिकेटिंग अगेंस्ट रिप्रेशन,* क्रेसकिल, एन.जे. : हैम्पटन प्रैस, 2003

मैकेअलिस्टर, पैम, *रिवीविंग द वेद ऑफ लाइफ : फेमिनिस्म एण्ड नॉनवाइलेंस,* फिरलाडोल्फिया, न्यू सोसाइटी पब्लिशर्स, 1982

मैकलॉग्लिन, ऐलिजाबेथ टी., *रस्किन एण्ड गाँधी,* क्रैनबरी, एन.जे.: एशोसिएट यूनिवर्सिटी प्रेस, 1974

मेहता, *वेद महात्मा गाँधी एण्ड हिज अपोस्टल्स,* लंदन, आन्द्रे ड्यूटश्च, 1977

मोर्टन, इलीनोर, *द वोमेन इन गाँधीज लाइफ,* न्यू यॉर्क, डॉड्ड, मीड एण्ड कम्पनी, 1953

मोजर-पुंगसुआन, येशुआ एण्ड थोमस वेबर (एडज.), *नॉनवाइलेंट इंटरवेंशन एक्रोस बॉर्डर्स : ए रिकर्रन्ट विजन,* होनेलुलु : स्पार्क एम., मतसुनागा इंस्टीच्यूट फॉर पीस / यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई प्रेस, 2000

नाइस, आर्ने, *कम्यूनिकेशन एण्ड आर्ग्यूमेंट : इलिमेंट्स ऑफ अप्लाइड सिमेंटिक्स,* ओस्लो : युनिवर्सिटी फॉर लैगेट, 1966

नाइस, आर्ने, *गाँधी एण्ड ग्रुप कंफ्लिक्ट : ऐन एक्सप्लोरेशन ऑफ सत्याग्रह,* ओस्लो : युनिवर्सिटी फॉर लैगेट, 1974

नाईपॉल, वी.एस., *इण्डिया : ए वाउण्डेड सिविलाइजेशन,* लंदन : आन्द्रे ड्यूट्श्च, 1977

नन्दा, बी.आर., *गाँधी एण्ड हिज क्रिटिक्स,* न्यू डेल्ही : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1985

नारायण, जयप्रकाश, 'गाँधी एण्ड द पॉलिटिक्स ऑफ डिसेंट्रलाइजेशन', इन सिबनारायण रे (एड), *गाँधी इण्डिया एण्ड द वर्ल्ड : एन इन्ट्रोडक्शन सिम्पोसियम,* मेलबोर्न : हॉथोर्न प्रेस, 1970, पृ.237-50

नारगोल्कर, वसंत, *जे.पी.'ज क्रूसेड फॉर रिवोल्यूशन,* न्यू डेल्ही : चांद, 1975

नायर, सुशीला, *महात्मा गाँधी, वॉल्यूम VII : प्रिपेयरिंग फॉर स्वराज :* अहमदाबाद, नवजीवन, 1996

ओरवेल, जॉर्ज, 'रिफलेक्शन ऑन गाँधी', इन *द कलेक्टेड ऐस्से, जर्नलिस्म एण्ड लेटर्स ऑफ जॉर्ज ओरवेल, वॉल्यूम 4 : इन फ्रन्ट ऑफ योज नोज,* हार्डमन्ड्सवर्थ, पेंगुइन, 1970, पृ.523-31

पैंथम, थौमस 'गाँधी एण्ड द कंस्टीच्यूशन : पार्लियामेंट्री स्वराज एण्ड विलेज स्वराज' इन भार्गवा (एड.) *पॉलिटिक्स एण्ड ऐथिक्स ऑफ द इण्डियन कंस्टीच्यूशन, पृ.59-78*

पारेख, बी., *गाँधीज पॉलिटिकल फिलोसफी : ए क्रिटिकल इग्जामिनेशन,* न्यू डेल्ही, अजन्ता, 1995

पारेल, ऐन्थोनी, 'गाँधी इन इंडिपेंडेंट इंडिया' इन जूडिथ एम. ब्राउन एण्ड एन्थोनी पारेल (एडज.), *द कैम्ब्रिज कम्पैनियन टू गाँधी*, कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011, पृ.219-38

पैरी, एलबर्ट, गैरेट्स एण्ड प्रेटेण्डर्स : ए हिस्ट्री ऑफ पैक्सटॉन, जॉर्ज, *नॉनवाइलेंट रजिस्टेंस टू द नाज़ीस*, ऑक्सफोर्ड : यूकैक्सटॉन, 1016

पेने, रॉबर्ट, *द लाइफ एण्ड डेथ ऑफ महात्मा गाँधी*, लंदन : द बॉड्ली हैड, 1969

पेल्टन, लेरॉय, एफएल, *द साइकोलोजी और नॉनवाइलेंस*, न्यू यॉर्क : पर्गामोन, 1974

पोलक, मिली ग्राहम, 'गाँधी एण्ड वोमेन', इन चन्द्रशेखर शुक्ला (एड), *गाँधी जी ऐज वी नो हिम*, बॉम्बे : वोरा 1945, पृ.47-51

पावर, पॉल एफ., *गाँधी ऑन वर्ल्ड अफेयर्स*, लंदन : ऐलन एण्ड अनविन, 1961

पावर्स, रोजर, 'जीन शार्प (बी.1928)', इन रोजन पावर्स एण्ड - विलियम वोगेले (एडज) *प्रोटेस्ट, पावर, एण्ड चेंज : ऐन इनसाइक्लोपीडिया ऑफ नॉनवाइलेंट एक्शन फ्रॉम ए.सी.टी.-यू.पी. टू वोमेन्ज सर्फेज*, न्यू यॉर्क एण्ड लंदन : गारलैण्ड, 1997, पृ.467-69

प्रसाद, राजेन्द्र, *ऑटोबायोग्राफी*, बॉम्बे : नैशनल बुक ट्रस्ट, 1957

पब्लिकेशन्स डिविजन, *रोमन रोलैण्ड एण्ड गाँधी कोरसपोण्डेंट (लेटर्स, डायरी, एक्स्ट्रैक्ट्स, इटीसी), नई दिल्ली : पब्लिकेशन डिविजन, मिनिस्ट्री ऑफ इंफोर्मेशन एण्ड ब्रॉडकास्टिंग, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, 1976*

प्यारेलाल, महात्मा गाँधी, वॉल्यूम I : द अर्ली फेज, अहमदाबाद, नवजीवन, 1965

क्यूअन्यू, शांग, 'महात्मा गाँधी इन मेनलैण्ड चाइना : अर्ली 1920ज टू लेट 1970ज' *गाँधी मार्ग*, 2013, वॉल्यूम 35, नं. 2, पृ.245-62

रामचन्द्रन जी., एण्ड टी.के. महादेवन (एडज), *गाँधी : हिज रिलिवेंस फॉर अवर टाइम्स*, बर्कर्ली, कैलिफोर्निया : वर्ल्ड विदाउट वार काउंसिल, सिरसा, 1974

रामचन्द्रन जी., एण्ड टी.के. महादेवन (एडज), *नॉनवाइलेंस आफ्टर गाँधी : ए स्टडी ऑफ मार्टिन लूथर किंग जूनियर*, न्यू डेल्ही : गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1968

रमन, टी.ए., *व्हट डज गाँधी वान्ट*, लन्दन : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1943

रमना मूर्ति, वी.वी., 'रोमन रोलैण्ड एण्ड गाँधी', *गाँधी मार्ग*, 1966, वॉल्यूम 10, नं.1, पृ.38-51

राव, के. राघवेन्द्र, 'द मोरल इकोनॉमी ऑफ ट्रस्टीशिप' इन सेठी (एड), *ट्रस्टीशिप : द गांधियन अल्टरनेटिव*, न्यू डेल्ही : गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1986, पृ.31-39

राउ, हीमो (एड), *महात्मा गाँधी ऐज जर्मन्स सी हिम (2न्ड इनलार्ज एडिशन)*, बॉम्बे : शकुन्तला, 1976

रे, एस. एन., एण्ड डी.के. चटर्जी, 'गाँधी एण्ड द मेकिंग ऑफ द इण्डियन कंस्टीच्यूशन' इन वी.टी. पाटिल (एड), *स्टडीज ऑन गाँधी*, न्यू डेल्ही, स्टर्लिंग, 1983, पृ.61-82

रिचर्ड्स, जेराल्ड, 'जीन शार्प'ज प्रेग्मेटिक डिफेंस ऑफ नॉनवाइलेंस', *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अप्लाइड फिलोसफी;*, 1991, वॉल्यूम, नं.1, पृ.59-63

रोलैण्ड, रोमेन, (कैथरीन ग्रोथ, ट्रांस.), *महात्मा गाँधी : द मैन हू बिकेम वन विद द यूनिवर्सल बींग,* लंदन / न्यू यॉर्क : स्वार्थमोर प्रेस / सेंचुरी, 1924

रोलैण्ड, रोमेन, *महात्मा गाँधी,* पेरिस : स्टोक, 1924

र्यान, हॉवर्ड, *ए क्रिटिक ऑफ नॉनवाइलेंट पॉलिटिक्स,* एवेलेबल ऐट http://www.netwood.net/~hryan; एक्सेस्ड ऑन 13 दिसम्बर 2018

सेठ, एच. एल., *गाँधी : नेशनलिस्ट और इंटरनैशनलिस्ट?* लाहौर : इण्डियन प्रिंटिंग वर्क्स, 1944

सरन, ए. के., 'ऑन द प्रमोशन ऑफ गाँधीयन स्टडीज ऐट द यूनिवर्सिटी लेवल', *गाँधी मार्ग,* 1979, वॉल्यूम 1, नं.7, पृ.363-81

सात्रे जीन-पॉल, *एक्जिस्टेंशियलिज़्म एण्ड ह्यूमनिज़्म,* लंदनः मेथुइन, 1973

चोक, कुर्ट, *अनार्मड इंसरक्शन : पीपुल पावर मूवेंट्स इन नॉनडेमोक्रेसीज,* मीन्नीपोलिस : यूनिवर्सिटी ऑफ मिन्नीसोटा प्रेस, 2005

स्चुमेचेर ई. एफ., *स्माय इज ब्यूटिफुल : ए स्टडी ऑफ इकोनॉमिक्स ऐज इफ पीपल मैट्टर्ड,* लंदन : आबाकस, 1974

सेठी, जे.डी., (एड) *ट्रस्टीशिप : द गांधियन अल्टरनेटिव,* न्यू देहली : गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1986

सेठी, जे.डी., 'इंट्रोडक्शन', इन सेठी (एड) *ट्रस्टीशिप : द गांधियन अल्टरनेटिव,* न्यू देहली : गाँधी पीस फाउण्डेशन 1986

शार्प, जीनी, 'इण्डिया'ज लेशन फॉर द पीस मूवमेंट', इन शार्प, *गाँधी ऐज ए पॉलिटिकल स्ट्रेटेजिस्ट,* बोस्टन, पोर्टर्ज सर्जेन्ट, 1979, पृ.121-129

शार्प, जीनी, 'ओरिजिन ऑफ गाँधी'ज यूज ऑफ नॉनवायलेंट स्ट्रगल : ए रिव्यू-ऐस्से ऑन ऐरिक एरिक्सन'ज गाँधी'ज ट्रूथ, इन शार्प, *गाँधी ऐज ए पॉलिटिकल स्ट्रेटेजिस्ट,* बोस्टन : पोर्टर, सर्जेन्ट, 1979, 23-41

शार्प, जीनी, *गाँधी ऐज ए पॉलिटिकल स्ट्रेटेजिस्ट,* बोस्टन : पोर्टर, बार्येन्ट, 1979,

शार्प, जीनी, 'गाँधी ऑन द थियरी ऑफ वॉल्यून्टरी सर्विट्यूड', इन शार्प, *गाँधी ऐज ए पॉलिटिकल स्ट्रेटेजिस्ट,* बोस्टन : पोर्टर, सर्जेन्ट, 1979, 43-59

शार्प, जीनी, *गाँधी वील्ड्ज द वीपन ऑफ मोरल पावर (थ्री केस हिस्टोरीज),* अहमदाबाद, नवजीवन, 1960

शार्प, जीनी, 'गाँधी'ज इवोल्यूशन ऑफ इण्डियन नॉनवाइलेंट एक्शन', इन शार्प, *गाँधी ऐज ए पॉलिटिकल स्ट्रेटेजिस्ट,* बोस्टन : पोर्टर, सर्जेन्ट, 1979, 87-120

शार्प, जीनी, 'गाँधी'ज लेशन फॉर 21 फर्स्ट सेंचुरी', *पीस रिसर्च अबस्ट्रैक्ट जर्नल,* 1999, वॉल्यूम 36, नं.2, पृ.157

शार्प, जीनी, 'गाँधी'ज पॉलिटिकल सिग्निफिकेंस टूडे', *गाँधी मार्ग,* 1965, वॉल्यूम 9, नं.1, पृ. 47-56

शार्प, जीनी, 'मोरैलिटी, पॉलिटिक्स, एण्ड पॉलिटिकल टेकनिक', इन शार्प, *गाँधी ऐज ए पॉलिटिकल स्ट्रेटेजिस्ट,* बोस्टन : पोर्टर, सर्जेन्ट, 1979, 251-71

शार्प, जीनी, 'नॉनवाइलेंस : मोरल प्रिंसिपल ऑर पॉलिटिकल टेकनिक? क्ल्यूज फ्रॉम गाँधी'ज थौट एण्ड एक्सपीरियंस', इन शार्प, *गाँधी ऐज ए पॉलिटिकल स्ट्रेटेजिस्ट,* बोस्टन : पोर्टर, सर्जेन्ट, 1979, 273-309

शार्प, जीनी, 'पीपल ''डोन्ट नीड टू बिलीव राइट', *नैशनल कैथोलिक रिपोर्टर,* 7 सितम्बर 1984

शार्प, जीनी, *सोशल पावर एण्ड पॉलिटिकल फ्रीडम,* बोस्टन : पोर्टर, सर्जेन्ट, 1980

शार्प, जीनी, *द पॉलिटिक्स ऑफ नॉनवायलेंट एक्शन,* बोस्टन : पोर्टर, सर्जेन्ट, 1973

शार्प, जीनी, *द रोल ऑफ पावर इन नॉनवायलेंट स्ट्रगल,* मोनोग्राफ सिरीज नम्बर 3, कैम्ब्रिज, एमएः द एल्बर्ट आइंस्टीन इंस्टीच्यूशन, 1990

शार्प, जीनी, 'द टेकनिक ऑफ नॉन-वायलेंट एक्शन' इन रॉबर्ट्स (एड), *सिविलियन रजिस्टेंस,* हारमोण्ड्सवर्थ : पेंगुइन, 1969, पृ.107-27

शार्प, जीनी, *वेजिंग नॉनवायलेंट स्ट्रगल : 20th सेंचुरी प्रैक्टिस एण्ड 21st सेंचुरी पोटेंशियल,* बोस्टन : इक्स्टेंडिंग होरिज़न बुक्स, 2005

शिरेर, विलियम एल., *गाँधी : ए मेमोअर,* न्यू यॉर्क, टचस्टोन, 1979

सिंगर पीटर, *प्रैक्टिकल ऐथिक्स,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1979

सिंगर पीटर, *द लाइफ यू कैन सेव : एक्टिंग नॉउ टू इण्ड वर्ल्ड पूवर्टी* : न्यू यॉर्क : रैण्डम हाउस, 2009

स्मिथ, डोनाल्ड एच., 'ऐन एक्जेजीसीस ऑफ मार्टिन लूथर किंग, जूनियर'ज सोशल फिलोसफी', इन डेविड जे. गैरो (एड), *मार्टिन लूथर किंग, जूनियर : सिविल राइट लीडर, थियोलोझान, ओरेटोर,* (वॉल्यूम 3), ब्रुकलिन, कार्सलोन, 1989, प॰829-37

स्मिथ, जॉन ई., 'द इनस्केपेबल ऐम्बीगीटी ऑफ नॉनवायलेंस', *फिलोसफी ईस्ट एण्ड वेस्ट,* 1969, वॉल्यूम 19, नं.2, प॰155-58

स्पीगेल, मार्गरेट, 'माय रिकलेक्शन ऑफ महात्मा गाँधी', *इण्डो एशिया : वीटरजरेसफ्ते फॉर पॉलिटिक, कल्वी एण्ड ....'* 1968, वॉल्यूम 10, नं.4, प॰361-67

स्पोडेक, हॉवर्ड, 'ऑन द ओरिजिन ऑफ गाँधीज पॉलिटिकल मैथेडोलोजी : द हैरिटेज ऑफ कथियावाड एण्ड गुजरात', *जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज;* 1970-71, प॰361-62

स्टीह्म, जुडिथ, *नॉनवायलेंट पावर : एक्टिव एण्ड पैस्सिव रजिस्टेंस इन अमेरिका,* लेग्जिन्टन, एमएः डी.आी. हीथ, 1972

सुहरूद, त्रिदीप, 'व्हाय रीड गाँधी बिटवीन हिज शीट्स?'' *तेहल्का मैगजीन.कोम,* वॉल्यूम-9 नं.15, 16 अप्रैल 2011ए Accessed from www.tehelka.com/story_main49.asp?filename=Opl604111Why.aspon 10 May 2019.

सम्मी, रैल्फ, 'नॉनवायलेंस एण्ड द केस ऑफ द इक्स्ट्रीमली रथलेस अपोनेन्ट', *पेसिफिका रिव्यू,* 1994, वॉल्यूम 6, नं.1, प॰1-129

सम्मी, रैल्फ, 'वन पर्सन'ज सर्च फॉर ए फंक्शनल अल्टरनेटिव वायलेंस', *गाँधी मार्ग,* 1983 वॉल्यूम 5, नं.1 पृ. 26-44

टंडन, विश्वनाथ (एड), 'द भूदान-ग्रामदान मूवमेंट (1951-74)', *गाँधी मार्ग,* 1983, वॉल्यूम 5 नम्बर्स 8/9, पृ. 492-500

टंडन, विश्वनाथ (एड), 'विनोबा एण्ड सत्याग्रह', *गाँधी मार्ग,* 1980, वॉल्यूम 2 नं. 7, पृ.385-94

तेंदुल्कर, डी.जी., *महात्मा : लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गाँधी,* न्यू डेल्ही : पब्लिकेशन्स डिविजन, मिनिस्ट्री ऑफ इंफोर्मेशन एण्ड ब्रॉडकास्टिंग, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, 1960-63, वॉल्यूम 8

टेरचेक, रोनाल्ड जे., *गाँधी : स्ट्रगलिंग फॉर ऑटोनोमी,* लैनहम : रॉमैन एण्ड लिटिलफील्ड, 1998

थिरेयू, हेनरी डेविड, *वाल्डन एण्ड सिविल डिसओबिडिएंस,* न्यू यॉर्क : हार्पर एण्ड रॉ, 1965

थोत्तम, ज्योति, 'गाँधी, लेलीवेल्ड एण्ड द ग्रेट इण्डियन तमाशा', *टाइम्स.कोम,* 1 अप्रैल 2011 Accessed from http://globalspin.blogs.time.com/2011/04/01/gandhi-Ielyveld-and-the-great-indian-tamasha/ on 3 May 2019.

ट्रेवोर-रोपर, हग, 'इंट्रोडक्शन एण्ड प्रिफेस', नॉर्मन कैमरॉन एण्ड आर. एच. स्टीवेन्स (ट्रांस.), *हिटलर'ज टेबल टाल्क 1941-1944 : हिज प्राइवेट कन्वर्जेशन्स,* न्यू यॉर्क : ऐनिग्मा, 2000

वर्मा, रविन्द्र, 'गाँधीज थियरी ऑफ ट्रस्टीशिप : ऐन ऐस्से इन अन्डरस्टैण्डिंग', इन सेठी (एड), *ट्रस्टीशिप : द गांधियन अल्टरनेटिव,* न्यू देहली : गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1986, पृ. 45-75

विनिंग, एलिजाबेथ गे, *फ्रेंड फॉर लाइफ : द बायोग्राफी और रूफुस एम. जॉन्स,* फिलाडेल्फिया, लिप्पिनकोट्ट, 1958

वॉग्ल, जोहेन्नस एच., 'हिटलर एण्ड इण्डियन', *Vierteljahrshefte fur Zeitgeschichte*, 1971, वॉल्यूम 19, नं.1, पृ.33-63

वार्ड ज्योफ्री सी., 'हाउ गाँधी बिकेम गाँधी', *द न्यू यॉर्क टाइम्स,* 27 मार्च 2011

वेबर, थोमस, *गाँधीज पीस आर्मी : द शान्ती सेना एण्ड अनार्मड़ पीसकीपिंगी,* सायराक्यूस : सायराक्यूस यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996

वेबर, थोमस, :'द मर्चर्स सिम्पली वाल्क्ड फोरवर्ड अंटिल स्ट्रक डाउन', नॉनवाइलेंट सफरिंग एण्ड कन्वर्जन' *पीस एण्ड चेंज,* 1993, वॉल्यूम 18, नं.3, पृ.267-89

वेबर, थोमस, '101 यूजेज फॉर ए डेड महात्मा' *गाँधी मार्ग,* 2015, वॉल्यूम 37, नं.2, पृ.387-72

वेबर, थोमस, एण्ड रॉबर्ट जे. बुरोस, *नॉनवाइलेंस : ऐन इंट्रोडक्शन,* पीस डोसियर 27, मेलबोर्न, विक्टोरियन एशोसिएशन फॉर पीस स्टडीज, 1991

वेबर, थोमस, 'आर्ने नास एण्ड गाँधी' *गाँधी मार्ग,* 2010, वॉल्यूम 32, नं.1, पृ, 87-100

वेबर, थोमस, *कंफ्लिक्ट रिजोल्यूशन एण्ड गांधियन ऐथिक्स,* न्यू डेल्ही, गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1991

संदर्भग्रंथ सूची

वेबर, थोमस, 'गाँधी एण्ड वर्ल्ड पॉलिटिक्स', इन भुपिन्दर एस. चिमनी एण्ड सिद्धार्थ मालावरपु (एडज), *इंटरनेशनल रिलेशन : पर्सपेक्टिव फॉर द ग्लोबल साउथ,* न्यू डेल्ही : पीयरसन 2012, पृ. 434-49

वेबर, थोमस, *गाँधी ऐज डिस्सिपल एण्ड मेण्टर,* कैम्ब्रिज / न्यू डेल्ही : कैम्ब्रिज यूनिवसि।टी प्रेस, 2004 / 2007

वेबर, थोमस, 'गाँधी इज डेड. लौंग लाइव गाँधी : द पोस्ट गाँधी गांधियन मूवमेंट इन इण्डिया' *गाँधी मार्ग,* 1996, वॉल्यूम 18, नं.2, पृ, 160-92

वेबर, थोमस, *गाँधी गांधिज्म एण्ड द गांधियन्स : ऐस्से बाय थोमस वेबर,* न्यू डेल्ही, रोली, 2006

वेबर, थोमस, 'गाँधीज साल्ट मार्च ऐज लिविंग सेरमोन' *गाँधी मार्ग,* 2001, वॉल्यूम 22, नं. 4, पृ, 417-35

वेबर, थोमस, *गोइंग नेटिव : गाँधीज रिलेशनशिप विद वेस्टर्न वोमेन,* न्यू डेल्ही, रोली, 2011

वेबर, थोमस, 'द इम्पैक्ट ऑफ गाँधी ऑन द डेवलपमेंट ऑफ जॉन गल्तुंग्स पीस रिसर्च' *ग्लोबल चेंज, पीस एण्ड सिक्यूरिटी,* 2004, वॉल्यूम 16, नं.1, पृ, 31-143

वेबर, थोमस, 'द लेसन फ्रॉम द डिसिपल्स : इज दियर ए कॉन्ट्राडिक्शन इन गाँधीज फिलोसफी ऑफ एक्शन' *मॉडर्न एशियन स्टडीज,* 1994, वॉल्यूम 28, नं.1, पृ, 195-214

वेबर, थोमस, *द शांति सेना : फिलोसफी, हिस्टरी एण्ड एक्शन,* हैदराबाद : ओरिएण्ट ब्लैकस्वान, 2009

वेबर, थोमस, 'गाँधीज ''लिविंग वाल'' एण्ड मौदे रॉयडेन्स ''पीस आरमन'', *गाँधी मार्ग,* 1988, वॉल्यूम 10, नं.4, पृ, 199-212

वोर्हले, लेन एम., 'फेमिनिस्ट डिबेट्स अबाउट नॉनवाइलेंस', इन वी.से. कूल (एड), *नॉनवायलेंस : सोशल एण्ड साइकोलोजिकल इश्यू,* लनहन : यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ अमेरिका, 1993, पृ. 207-20

वूडकौक, *गाँधी,* लंदन : फोन्टाना, 1972

युण्डब्लट, जून ज., जी. रामचन्द्रन एण्ड टी.के. महादेवन (एडज), नॉनवायलेंस आफ्टर गाँधी : ए स्टडी ऑफ मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नई दिल्ली : गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1968, पृ, 51-57